वट वृक्ष – 7

उत्तर पुस्तिका

Harbour Press®
INTERNATIONAL

1

इकाई-I (वसंत)

मुक्ति की आकांक्षा

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-9 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कविता में बंधनयुक्त पक्षी को वाणी दी गई है ताकि वह अपनी पीड़ा को मनुष्यों के समक्ष व्यक्त कर सके। वह चाहती है कि मनुष्य इस पीड़ा को अनुभव करके उसे (पक्षी) पिंजरे से आज़ाद कर दे ताकि वह स्वतंत्रता पूर्वक इधर-उधर धरती एवं आकाश में विचरण कर सके।
2. 'जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी' इस पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि पिंजरे में सभी-सुख सुविधाएँ हैं। सही वक्त पर दाना-पानी मिल जाता है। इसकी चिंता चिड़िया को नहीं रहती है। उसे न तो किसी खतरनाक पक्षी के शिकार होने का डर रहता है, न ही किसी शिकारी का डर अर्थात् वह पिंजरे में सुरक्षति है। चिड़िया को पता है कि पिंजरे के बाहर उसे जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।
3. कवि इस पक्षी के माध्यम से यह संदेश देना चाहता है कि, स्वतंत्रता हम सभी के लिए प्रिय होती है। बंधनयुक्त पंछी पिंजरे में बंद रहकर पीड़ा का अनुभव करता है। वह भी खुले आकाश में उड़कर अपनी ज़िंदगी जीना चाहता है।

Page-10 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. स
3. अ

ख. 1. चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजरे के बाहर
धरती बहुत बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उन्हें
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।

2. बाहर दाने का टोटा है
यहाँ चुग्गा मोटा है।
बाहर बहेलिए का डर है,
यहाँ निर्द्वंद्व कंठ स्वर है।

ग. 1. प्रस्तुत कविता का शीर्षक मुक्ति की आकांक्षा है।

2. इस कविता के कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं।

3. पिंजरा टूटते या खुलते ही चिड़िया की प्रतिक्रिया उड़ने की होगी। वह बंधनयुक्त जीवन से आज़ाद होकर आकाश में दूर तक उड़ान भरकर अपनी खुशी व्यक्त करना चाहेगी। वह प्रकृति के सौंदर्य का आनंद लेना चाहेगी। वह दाना-पानी की तलाश में दूर तक उड़ना चाहेगी।

4. पिंजरे के बाहर चिड़िया को प्यास लगने पर पानी के लिए नदी, समुद्र या झरना तलाशना पड़ेगा। चारा पाने के लिए दर-दर भटकना पड़ेगा। चिड़िया को बाहर घात लगाए बैठे बहेलिए से भी डर है। चिड़िया बाहरी दुनिया के खतरों से परिचित होते हुए भी निरंतर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है।

5. पिंजरे में चिड़िया के लिए अनेक

तरह की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्यास लगने पर कटोरी में जल तथा भूख लगने पर चुगने के लिए दाने उपलब्ध हैं। उसे पिंजरे में शिकारी का भी डर नहीं। वह बिल्कुल स्वच्छंद होकर चहचहा सकती है। और अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर सकती है।

6. पिंजरे में बंद चिड़िया पिंजरे में बनी लोहे की दीवारों में स्वयं को बंद नहीं रखना चाहती। सारी सुख-सुविधाओं के बावजूद उसे गुलामी का जीवन पसंद नहीं है। वह पिंजरे की सलाखों को तोड़ने के लिए बार-बार प्रहार तब तक करती रहेगी जब तक कि सलाखें टूट नहीं जाती अर्थात् वह पिंजरे से मुक्त नहीं हो जाती।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करें।

Page-11 (भाषा-ज्ञान)

क. चिड़िया, धरती, समुद्र, नदी, झरना

ख.	उड़ान	बड़बड़ाना
	लगान	मिलावट
	थकावट	दौड़
ग.	मटकना	सटकना
	डर	ज्वर
	मोटा	लोटा
	गाएगी	सुनाएगी

घ. 1. सम्मति 2. संरक्षण 3. संयोग 4. संलाप 5. संशय 6. संसार 7. संयम

(कौशल-परीक्षण)

1. अध्यापक विद्यार्थी से स्वयं करने को कहें।

2. मनुष्य हो या पशु-पक्षी, स्वतंत्रता हर किसी के लिए प्रिय होती है। 'मुक्ति की आकांक्षा' कविता में स्वतंत्रता का महत्त्व बताया गया है। पक्षी उन्मुक्त रहकर ही खुले आकाश में उड़ सकते है। अगर पक्षी खुले आकाश में उड़ेंगे तो हर तरह का जीवन जी सकते हैं। वे प्यास लगने पर नदी, समुद्र या झरने का पानी पी सकते हैं। जैसे मनुष्यों के लिए स्वतंत्रता में सच्चा और स्वाभाविक आनंद छिपा होता है, वैसे ही पशु-पक्षियों के लिए भी स्वतंत्रता में सच्चा और स्वाभाविक आनंद छिपा होता है। हमारी भूमिका पशु-पक्षियों की आज़ादी देने की हो सकती है। हम पिंजरों और अन्य जगहों पर दिखाई दे रहे बंद पशु-पक्षियों को आज़ाद करके अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

Page-12 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. पशु-पक्षियों को भी आज़ादी उतनी ही प्रिय होती है जितनी एक मनुष्य को होती है। आज़ाद पंछी भी हर तरह का जीवन जीना चाहते हैं, वे भी खुले आसमान में उड़कर प्रसन्न होकर चहचहा सकते हैं और अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर सकते हैं। अगर पक्षी स्वतंत्र रहेंगे तो कहीं भी जाकर बैठ सकते हैं, कहीं भी जाकर प्यास लगने पर पानी पी सकते हैं, जैसे समुद्र, तालाब, झरने आदि से। आज़ाद पंछी उड़ते-उड़ते ही क्षितिज की सीमा तक पहुँच सकते हैं। तथा वृक्ष की डाली पर लगे कड़वे-मीठे फल चुगकर खा सकते हैं। वे पेड़ की सबसे ऊँची टहनी के सिरे पर बैठकर झूला झूल सकते हैं।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वय करें।

4. हवाओं में पंख फैलाए
नीले नभ से तय करते हैं
जो अपनी दिशाएँ
हाँ पंछी हैं वो!!
चंचलता जिनकी नज़रों से छलके

इस पल यहाँ तो अगले पल
वहाँ जो चहके
हाँ पंछी हैं वो!!
दायरों में जो नहीं बँधते
पिंजरों में जो नहीं रहते
अपनी सीमा जो स्वयं
तय हैं करते
हाँ पंछी हैं वो!!
लक्ष्य जिनका अटल है रहता
सारा जग जिन्हें अपना है लगता
कहीं कोई फर्क नहीं है दिखता
हाँ पंछी हैं वो।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

2 संसार पुस्तक है

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-17 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. यह पत्र हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुत्री को लिखा है।

2. लेखक पत्र द्वारा अपनी पुत्री को दुनिया के छोटे-बड़े देशों में जो हो रहा है उसके बारे में बताना चाहता है ताकि पत्रों द्वारा उनकी पुत्री मानवीय सम्यता तथा प्राकृतिक तथ्यों से परिचित हो सके।

3. पत्र में धरती लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी बताई गई है। क्योंकि बहुत दिनों तक इसमें कोई आदमी न था। आदमियों से पहले सिर्फ़ जानवर थे और जानवरों से पहले एक ऐसा समय था, जब इस धरती पर कोई जानदार चीज़ नहीं थी।

4. खुद संसार-रूपी पुस्तक को पढ़ना, दुनिया का हाल जानने का असली तरीका है। इसके लिए अक्षर ज्ञान होना ज़रूरी है। अक्षर ज्ञान के सहारे ही प्रकृति के अक्षर पढ़े जा सकते हैं।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स   2. द
3. द

Page-18

ख. 1. लेखक ने प्रकृति की किताबें पत्थरों और चट्टानों को कहा है। उन्हें छोटे-छोटे और गोल, चमकीले रोड़ों द्वारा पढ़ा जा सकता है।

2. चट्टान से टूटा हुआ खुरदरा, नोकीला टुकड़ा पानी के साथ बहकर दरिया में पहुँच जाता है और दरिया के पेंदे में लुढ़कते रहने से वह घिसकर चिकना और चमकीला रोड़ा बन जाता है।

3. अगर दरिया उसे और आगे ले जाता तो छोटा होते-होते अंत में वह बालू का एक ज़र्रा हो जाता और समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता, जहाँ एक सुंदर बालू का किनारा बन जाता, जिस पर छोटे-छोटे बच्चे खेलते और बालू के घरौंदे बनाते।

4. इस पत्र का उद्देश्य मानवीय सभ्यता तथा प्राकृतिक तथ्यों का बोध करवाना है। पंडित नेहरू को अपनी पुत्री के प्रति आपार स्नेह था। इलाहाबाद की जेल में रहकर भी वे अपनी ज़िम्मेदारी को निभाते थे तथा अपनी पुत्री के

अंदर प्रकृति को जानने समझने की क्षामता का विकास कराना चाहते थे। पंडित नेहरू अपनी पुत्री की हर जिज्ञासा को पत्र द्वारा कभी कहानी के रूप में तो कभी कथा के रूप में सुलझाते थे।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।
2. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।
3. अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

(भाषा-ज्ञान)

क.

तत्सम शब्द	तद्भव शब्द	विदेशज
पृष्ठ	पत्थर	जुबान
अस्थि	पहाड़	शौक़
आनंद	पानी	चीज़ें
कथा	भाई	ख़त

ख. अ. पहाड़ – हमें पहाड़ ऊँची-ऊँची जगहों पर देखने को मिलते हैं।

ब. सागर – ऐतिहासिक रूप से, चार प्रमुख महासागर हैं– अटलांटिक, प्रशांत, हिंद और आर्कटिक।

स. वन – वन में हमें कई तरह के जानवर देखने को मिलते हैं।

द. धरा – यह धरा लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है।

Page-19

ग. अ. किताबें मेज़ पर रखी हैं।

ब. नदी प्रदूषित हो चुकी है।

स. पत्थर चट्टानों से टूटकर रोड़े बन गए।

द. कुरसियाँ और गद्दे कमरे में रखवा दो।

घ. व्यक्तिवाचक संज्ञा – खत, इंग्लैंड, मसूरी, इलाहाबाद

जातिवाचक संज्ञा – टापू, किताबें, पहाड़, जंगल, जानवर, नदियाँ

भाववाचक संज्ञा – चमकीला, चिकना

ङ.

विशेषण	संज्ञा
जानदार	चीज़
चमकीला	रोड़ा
गरम	धरती
घिसे	किनारे
सुंदर	परियाँ
बड़ी	चट्टान

(कौशल-परीक्षण)

1. **पत्र** – पत्र अपनी बात दूसरों तक लिखकर पहुँचाने का एक माध्यम है। जैसे-जैसे भाषा का विकास हुआ, उसी के साथ पत्र लेखन का भी विकास होता गया। इस प्रकार यह माना जा सकता है कि पत्र लेखन का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन काल में मोबाइल, इंटरनेट जैसे संचार के साधन नहीं हुआ करते थे इसलिए पत्र के माध्यम से ही लोग अपनी बात दूसरों तक पहुँचाते थे।

   ई-मेल– का मतलब electronic mail होता है, ई-मेल चिट्ठी भेजने का आधुनिक माध्यम है, घरों से लेकर सरकारी दफ़्तरों तक में ई-मेल का उपयोग किया जाता है। कार्यालयों, अदालतों, स्कूलों, कॉलेजों आदि जगहों पर ई-मेल को सूचना भेजने तथा प्राप्त करने का आधिकारिक तरीका बना लिया गया है। यह कागज़ पर लिखी गई चिट्ठी के समान ही होता है। बस कागज के पत्र (Letter) और ई-मेल में इतना ही अंतर होता है कि कागज के पत्र को कागज पर लिखा जाता है, और e-mail को हमें कंप्यूटर पर लिखना पड़ता है।

2. संसार रूपी पुस्तक से हमने आज से लाखों-करोड़ों साल पहले की धरती के जन्म और मानव सभ्यता के अस्तित्व में आने के बारे में सीखा। जैसे कि पहले धरती कैसी थी? धरती पर पहले कौन रहता था? पहले के जानवर कैसे होते थे? इन सभी प्रश्नों के उत्तर संसार रूपी पुस्तक में संकलित हैं। धरती पर पहले किसी भी प्रकार के जीवन की कोई भी संभावना नहीं थी। धीरे-धीरे जब यह धरती ठंडी हुई, तब यहाँ जानवरों का जन्म हुआ। जानवरों के जन्म के कई हज़ार सालों बाद, यहाँ मानव-जाति का जन्म हुआ।

Page-20 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वय करें।
2. प्राचीन समय में डाक के द्वारा लोग अपने संदेशों को दूसरों तक पहुँचाते थे। लोगों के खतों या पत्रों को पहुँचाने का काम डाकिया करता था। वह इन पत्रों को घर-घर जाकर पहुँचाता था लेकिन अब डाकिया बहुत कम नज़र आता है क्योंकि आज के समय में इंटरनेट और ई-मेल के जरिए लोग घर बैठे अपने संदेशों को दूसरों तक पहुँचा देते हैं। लोगों के लिए संचार का ये माध्यम सरल और सस्ता है। यही कारण है कि अब डाकिया पहले के समय के अनुसार कम नज़र आने लगा है।
3. विद्यार्थी स्वय करें।
4. विद्यार्थी स्वय करें।

3 हमारा दायित्व

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-24 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत पाठ तेल और गैस की समस्या, उसके संरक्षण तथा दुरुपयोग पर आधारित है।

2. लेखिका ने इस समस्या के लिए बढ़ती जनसंख्या की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए जंगल का अधिक मात्रा में काटना है, तेल तथा गैस का अधिक मात्रा में प्रयोग करना तथा तेल और गैस के संरक्षण की कमी के प्रति मनुष्य के भीतर जानकारी का आभाव होना जैसे कारण बताए हैं।

3. बढ़ती आबादी के कारण जंगल कटने लगे हैं जिससे लकड़ी की कमी होने लगी है। यातायात के साधनों तथा परिवहन साधनों का अधिक प्रयोग करने से प्रदूषण की समस्या उत्पन्न होने लगी है जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों में वृद्धि देखी जा सकती है।

4. दिल्ली सरकार का एक दिन सम तो दूसरे दिन विषम नंबर की गाड़ियाँ सड़कों पर उतारना इस दिशा में अच्छा प्रयोग था। निस्संदेह ऐसे प्रयोगों में कठिनाइयाँ आती हैं। जिन लोगों का प्रत्येक दिन अपने दफ़्तर जाने का साधन उनकी गाड़ियाँ थी, उनके लिए समय से अपने दफ़्तर पहुँचने जैसे परेशानी सामने आई। हालांकि इसके अतिरिक्त इस योजना को लागू करने से राजधानी दिल्ली में प्रदूषण का स्तर कम हुआ और सड़कों पर गाड़ियों की संख्या आधी रह गई जिसके चलते ईंधन (पेट्रेल-डीजल) की काफ़ी बचत भी की जा सकी।

Page-25 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ✗ 2. ✓
3. ✓ 4. ✓

ख. 1. स. 2. अ
3. द 4. द

Page-26

ग. 1. दैनिक जीवन में तेल और गैस दोनों की हमारे लिए बहुत आवश्यकता है। धरती का दोहन करके हमने अनेक चीज़ें प्राप्त की हैं। तेल और गैस मानव की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। वस्तुतः ये दोनों हमें विरासत में मिली ऐसी धरोहर हैं जिनका संरक्षण करके आनेवाली पीढ़ियों को देना हमारा दायित्व है लेकिन हम इस दायित्व को साधारण मानते हैं। हमें लगता है कि अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई से इन्हें खरीदते हैं तो इन पर हमारा अधिकार है।

2. घर में कच्चा मांस खाते हुए आदिमानव की तसवीर लगाने की सलाह इसलिए दी गई है क्योंकि इसे भविष्य में तेल और गैस की वास्तविकता से जोड़ा गया है। तेल और गैस के अत्यधिक प्रयोग से इनका भंडार समाप्त हो सकता है। बढ़ती आबादी की ज़रूरतें पूरी करने के लिए जंगल कटने लगे हैं जिससे लकड़ी की कमी होने लगी है। ऐसे में पकाने के साधन ही खत्म हो जाएँगे तो कच्चा मांस ही खाना पड़ेगा फिर हममें और आदिमानव में क्या फ़र्क रह जाएगा?

3. मुंबई में टैक्सी के बढ़ते खर्च को देखते हुए कई स्थानों पर लोकल ट्रेन और बस के बाद गंतव्य पर जाने के लिए साइकिल प्रणाली शुरू की गई है।

4. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की दिशा में व्यक्तिगत तथा सरकारी स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए। हमें व्यक्तिगत तौर पर यह प्रण लेना चाहिए कि हम पानी, बिजली, गैस तथा तेल का अंश भर भी व्यर्थ नहीं करेंगे। यह प्रतिज्ञा लेकर दूसरों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें तो ये पंक्तियाँ स्वयं को चरितार्थ करने लगेंगी "मैं अकेला चला था, कारवा संग हो लिया।"

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.	गैस	पेट्रोल	टैक्सी
	स्कूटर	लोकल	नंबर
	मीडिया	ट्रेन	टोकन
ख.	बॉल	सॉस	हॉट
ग.	विद्या	शुद्ध	युद्ध

घ. 1. पाप-पुण्य द्वंद्व समास
2. चौराहा द्विगु समास
3. रातोंरात अव्ययीभाव समास
4. त्रिवेणी बहुव्रीहि समास

Page-27

ङ. 1. रजनी की बहन यहाँ आई थी।
2. मुझे लगा कि कोई रो रहा है।
3. यह मेरी माँ की शॉल है।
4. पापा की कमीज़ मिल नहीं रही।
5. वह कह रहा था कि उसे भी जाना है।

कौशल-परीक्षण

1. तेल तथा गैस के अतिरिक्त पानी और बिजली का संरक्षण करना भी अति आवश्यक है। हमें व्यक्तिगत तौर पर यह प्रण लेना चाहिए कि हम पानी, बिजली, गैस तथा तेल का अंश भर भी व्यर्थ नहीं करेंगे।

2. प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए हम बहुत जागरूक हैं क्योंकि अगर भविष्य में तेल और गैस की कमी हो गई तो हमें भोजन पकाने के लिए ईंधन की कमी हो जाएगी। कुछ स्वयंसेवी संस्थाएँ इस विषय में लोगों को जागरूक कर सकती हैं। विद्यालयों में इन समस्याओं पर भाषण, वाद-विवाद, परियोजना कार्य देकर विद्यार्थियों में जागरूकता पैदा की जा सकती है। कहते हैं– 'जब जागो तभी सवेरा।' गैस और तेल का संरक्षण अत्यंत आवश्यक हैं क्योंकि इनके बिना हम आधुनिक जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. स्लोगन – प्रकृति का मत करो शोषण, सब मिलकर बचाओ पर्यावरण।
3. **प्रकृति और हम**

मानव और प्रकृति के बीच बहुत गहरा संबंध है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। मानव अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए प्रकृति की ओर देखता है और जिज्ञासा सौंदर्य से विमुग्ध होकर प्रकृति भी सचेत सत्ता का अनुभव करने लगती है। हमारे धार्मिक ग्रंथ, ऋषि-मुनियों की वाणियाँ, कवि की काव्य रचनाएँ, संतों-साधुओं के अमृत वचन सभी प्रकृति की महत्ता से भरे पड़े हैं। विश्व की लगभग सारी सभ्यता का विकास प्रकृति की ही गोद में हुआ और तब इसी से मनुष्य के रागात्मक संबंध भी स्थापित हुए, किंतु कालांतर में हमारी प्रकृति से दूरी बढ़ती गई। इसके फलस्वरूप विघटनकारी रूप भी सामने आए। मत्स्यपुराण में प्रकृति की महत्ता को बताते हुए कहा गया है–सौ पुत्र एक वृक्ष समान। प्रकृति के संरक्षण की हम अथर्ववेद में शपथ खाते हैं–'हे धरती माँ! जो कुछ भी तुमसे लूँगा, वह उतना ही होगा जितना तू पुनः पैदा कर सके। तेरे मर्मस्थल पर या तेरी जीवन शक्ति पर कभी आघात नहीं करूँगा।' मनुष्य प्रकृति के साथ किए गए इस वादे पर कायम रहा किंतु जैसे ही इसका अतिक्रमण हुआ, प्रकृति के विध्वंसकारी और विघटनकारी रूप उभरकर सामने आए। सैलाब और भूकंप आए। पर्यावरण में विषैली गैसें घुलीं। मनुष्य की आयु कम हुई। धरती एक-एक बूँद पानी के लिए तरसने लगी, लेकिन यह वैश्विक तपन हमारे लिए चिंता का विषय नहीं बनी। प्रकृति की इसी महत्ता को प्रतिस्थापित करते हुए पद्मपुराण का कथन है कि जो मनुष्य सड़क के किनारे तथा जलाशयों के तट पर वृक्ष लगाता है, वह स्वर्ग में उतने ही वर्षों तक फलता-फूलता है, जितने वर्षों तक वह वृक्ष फलता-फूलता है। इसी कारण हमारे यहाँ वृक्ष पूजन की सनातन परंपरा रही है। हम कह सकते हैं कि प्रकृति से मनुष्य का संबंध अलगाव का नहीं है, प्रेम उसका क्षेत्र है। सचमुच प्रकृति से प्रेम हमें उन्नति की ओर ले जाता है और इससे अलगाव हमारी अधोगति का कारण बनता है। एक कहावत भी है– कर भला तो हो भला।

4. **प्रकृति और संसाधन के बीच संवाद**

संसाधन – हैलो, प्रकृति, आप कैसे हो?

प्रकृति – मैं ठीक हूँ लेकिन थोड़ा चिंतित हूँ।

संसाधन – पर क्यों? क्या हुआ?

प्रकृति – आजकल लोग मेरा दोहन कर रहे हैं।

संसाधन – यह तो बड़ी चिंता वाली बात है।

प्रकृति – आजकल लोगों को जागरूक करने के लिए कितना कुछ विद्यालयों में, कॉलेजों में, समाचारपत्रों में बता रहे हैं, लेकिन लोग इतना सब सुनकर भी यह सब करते हैं।

संसाधन – अगर मान लो, लोग अपनी बढ़ती आबादी की ज़रूरतें पूरी करने के लिए जंगल को काटने

लगें, तो लकड़ी की कमी हो जाएगी।

प्रकृति – आप सही कह रहे हैं, लेकिन यह सब रोकने लिए हम क्या कर सकते हैं?

संसाधन – यह सब रोकने के लिए सभी क्षेत्रों के लोगों को आगे आना चाहिए। उन्हें इसके हानिकारक प्रभावों से अवगत कराया जाना चाहिए।

प्रकृति – आपने सही कहा, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

4 पैसा-पैसा

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-31 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. हिंदुस्तान की ज़मीन की विशेषता यह है कि वह हमें कभी भूखा नहीं रख सकती क्योंकि यहाँ गंगा, यमुना, कृष्णा, गोदावरी जैसी अच्छी-अच्छी नदियाँ हैं, अच्छे-अच्छे पहाड़ हैं, जड़ी-बूटियाँ हैं, अनाज हैं, फल-तरकारियाँ, मेवे सब कुछ हैं।

2. लेखक पहले और आज के समय में यह अंतर पाते हैं कि पहले के समय में गाँव का बढ़ई हर किसी के घर पर जो काम निकलता था, वह कर देता था और पैसे नहीं माँगता था। साल के अंत में जब फ़सल होती थी, तब हर किसान फसल का एक हिस्सा बढ़ई के घर पहुँचा देता था। इसी तरह गाँव के लुहार, वैद्य, शिक्षक आदि गाँव की सेवा करते थे और उन्हें फ़ल का हिस्सा मिल जाता था। आज यदि बीमार आदमी डॉक्टर से औषधि माँगता है, तो डॉक्टर भी उससे पैसे माँगता है।

3. काम करने के लिए दो हाथ, बुद्धि, हृदय ईश्वर की देन हैं। ये सब देकर भगवान ने हमपर उपकार किया है। लेकिन बीच में हम लोग भूल गए हैं और पैसे के बहकावे में आकर भगवान का नाम लेने के बदले पैसे का नाम लेने लगे हैं।

4. प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य है परोपकार तथा सहयोग की भावना जागृत करना, परिश्रम का सम्मान, श्रमिक के अधिकारों के प्रति सजगता और मिल-जुलकर काम करना है। आचार्य विनोबा भाव श्रमिकों को उनका सच्चा हक दिलवाने के साथ-साथ शहरी लोगों को 'जमाखोरी' जैसे अमानवीय कृत्य से बचने की सीख देते हुए अपासी सहयोग से कार्य करने की प्रेरणा देना हैं। विनोबा जी इस तथ्य से श्रमिकों या किसानों को परिचित करवाना चाहते थे कि अगर सभी संगठित होकर एकमत से कार्य करें तो उनका शोषण कोई नहीं कर सकता। वे अपनी समस्या का हल स्वयं कर सकते हैं।

Page-31-32 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. ब

3. ब 4. द

ख. **1.** 'किसान के सुख-दुख में सबका सुख-दुख रहता था' से लेखक का आशय यह है कि गाँव की ज़मीन का मालिक कोई न रहे, ज़मीन पर सब काम करें, ज़मीन सबकी हो जाए, सब मिल-जुलकर काम करें, एक-दूसरे की सेवा करें, तो सभी सुखी होंगे। किसी के खेत में कोई काम होगा, कहीं कुआँ बनाना होगा, तो सब लोग मदद को दौड़ पड़ेगे, किसी के खेत में कम फ़सल होगी तो सब लोग अपनी फ़सल का थोड़-थोड़ा हिस्सा देंगे। जब हम इस तरह गाँव को परिवार बनाकर आचार्य बिनोबा भावे के उनुसार गाँव को परिवार एक दूसरे की मदद करके बनाया जा सकता है। रहेंगे, तो भगवान खुश होगा।

2. किसी खेत में कोई काम निकलेगा, कहीं कुआँ बनाना होगा, तो सब लोग मदद को दौड़ पड़ेंगे। किसी के खेत में कम फसल होगी तो सब लोग उसे अपनी फसल का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा देंगे। जब हम सब गाँव को एक परिवार बनाकर रहेंगे, तब गाँव का कोई व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा।

3. मुँह उपभोग का प्रतीक है। भगवान ने हमें एक मुँह और दो हाथ दिए हैं अर्थात हमारा उपभोग सीमित होना चाहिए किंतु एक मुँह होने पर भी व्यक्ति दस लोगों का अनाज रख लेते हैं। अगर भगवान ने रावण जैसे दस मुँह दिए होते तो इनसान लालच और संग्रह की सभी सीमाएँ पार कर जाता वह जमाखोरी को बढ़ावा देता है।

4. लेखक ने शहरी लोगों को राक्षस इसलिए कहा है क्योंकि वे अपने पास दस लोगों का अनाज रख लेते हैं। उनको धन का इतना लोभ होता है कि उसका ढेर जमा करके रखते हैं तथा महंगे दामपर बेचते है। लेकिन एक दिन सब छोड़कर चले जाते हैं। अगर हम इसी तरह चलेंगे तो कभी सुखी नहीं होंगे।

5. सभी के दुख का कारण यह है कि आज के समय में कोई भी मिल-जुलकर काम नहीं करता। अगर हम अपने हाथों से काम और दूसरों की सेवा करेंगे, तो सभी सुखी होंगे। मानलीजिए हमारे पड़ोसी के दो हाथ हैं और हमारे दो हाथ अगर उसके दो हाथ और हमारे दो हाथ मिलकर काम करेंगे तो सबको खाना मिलेगा। तब सभी सुखी जीवन व्यतीत कर पाएँगे। लेकिन आज के समय में लोग पड़ोसी की भी सेवा करते हैं तो पैसे माँगते हैं। अगर हम मिल-बाँटकर खाएँ और सब मिलजुलकर काम करें तो दुख का निवारण हो सकता है।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

पाठ-विस्तार

अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें।

भाषा-ज्ञान

क. गंगा, नदियाँ, गाँव, नहीं, कुआँ, मुँह, में

Page-33

ख. 1. कर्ता कारक 2. कर्ता कारक
3. संबंध कारक 4. संप्रदान कारक
5. संबंधकारक 6. संबंधकारक

ग. 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. जातिवाचक संज्ञा
4. समूहवाचक संज्ञा

Page-33-34

घ. 1. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. पुरुषवाचक सर्वनाम
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

ङ. स्त्रीलिंग पुल्लिंग
स्त्रीलिंग पुल्लिंग
पुल्लिंग स्त्रीलिंग

च.
- फल और तरकारियाँ
- जड़ी और बूटियाँ
- मिल और बाँटकर
- दाना और पानी
- घर और आँगन

(कौशल-परीक्षण)

1. 'सर्वे भवंतु सुखिन:' से आशय है–
सब शुभ को पहचान सकें।
कोई प्राणी दुखी न हो।
इस उद्देश्य की प्राप्ति तभी संभव है जब हम सब मिलकर काम करें, हर किसी के सुख-दुख में मदद करें, जिससे कोई भी प्राणी दुखी न हो।

2. किसी के मुख का निवाला छीनने में आनंद नहीं बल्कि किसी क्षुधा पीड़ित को खिलाने में आनंद है, क्योंकि जो आनंद किसी दूसरे व्यक्ति को खाना खिलाने में आता है, उस आनंद की खुशी अलग ही होती है। लेकिन आज के समय में लोग दूसरे से पहले अपने बारे में सोचते हैं, क्योंकि वे पहले अपना पेट भरना जानते हैं। आजकल के धन ने व्यक्ति को हृदयहीन और स्वार्थी बना दिया है। पैसे की दौड़ में व्यक्ति अनैतिक कृत्य करने में संकोच नहीं करता।

विषय संवर्धन गतिविधियाँ

1. **'दादा बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपैया'**
धन का महत्व प्रत्येक युग में छोटे-बड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए अवश्य रहा है। सच तो यह है कि धन के अभाव में व्यक्ति का किसी भी तरह से जीवित रह पाना संभव नहीं हो पाता। आखिर इतना धन तो हर व्यक्ति को चाहिए ही कि वह अपने घर-परिवार, बाल-बच्चों के साथ निश्चिंत होकर गुज़र-बसर कर सके और रोटी, कपड़ा व मकान जैसी प्राथमिक एवं ज़रूरी आवश्यकताएँ पूरी कर सके। धन की आवश्यकता को अनिवार्य बताते हुए कबीर जैसे ज्ञानी, संसार-त्यागी और वैरागी संत को भी भगवान से प्रार्थना करते हुए कहना पड़ा कि–

'साई इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाए।'

अत: यह तो स्पष्ट है कि जीवन जीने के लिए धन एक अनिवार्यता है। शरीर रहेगा, तभी व्यक्ति धर्म-कर्म आदि सभी तरह के पुरुषार्थ कर सकेगा। शरीर रक्षा के लिए अन्न-वस्त्र आदि आवश्यक हैं। उन्हें पाने के लिए पास में धन रहना भी उतना ही आवश्यक है। धन को बुरा या अनिष्टकारक तब मान लिया जाता है जब वह संसार की अन्य सभी बातों, रिश्ते-नातों, सगे-संबंधियों और मानवीयता से भी मुँह मोड़ कर सर्वोच्च महत्व पा लेता है। जब धन को मानवता और धर्म, बल्कि भगवान से भी उच्च सिंहासन पर विराजमान कर दिया जाता है, तब धन कई तरह के बवालों का जन्मदाता बनकर अपने साथ-साथ दूसरों का जीवन भी दुर्भर कर देता है। ऐसा धन बेकार है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. **दो हाथों और एक मुख का सदुपयोग**
कोशिश कर, हल निकलेगा।

आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
मेहनत कर पौधे को पानी दे,
बंजर ज़मीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
ज़िंदा रख, दिल में उम्मीद को,
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुज़रने की,
जो है आज थमा-थमा सा कल निकलेगा।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र-1

खंड 'अ'

Page-37

क. 1. भारत की अंतरिक्ष यात्रा की कहानी 1975 से प्रारंभ होती है।

2. भारतीय वैज्ञानिकों की प्रतिभा की प्रशांसा उनके द्वारा सोवियत भूमि से किए गए उपग्रह 'आर्यभट्ट के सफल प्रक्षेपण' के कारण हुई।

3. आर्यभट्ट के बाद 'एप्पल', 'भास्कर' तथा 'इनसेट-ए' उपग्रहों का प्रक्षेपण 1981 में किया गया।

4. इस गद्यांश का उचित शीर्षक 'उपग्रहों की अंतरिक्ष यात्रा' है।

खंड 'ब'

ख. 1. भूमि, धरा 2. वन, कानन
3. सरिता, नद

ग. 1. निजवाचक सर्वनाम
2. मध्यम पुरुष सर्वनाम
3. अनिश्यच वाचक सर्वनाम

घ. 1. पुल्लिंग 2. पुल्लिंग
3. पुल्लिंग

ङ. दिन और रात ऊँचा और नीचा
माता और पिता

च. 1. फूल के साथ काँटे भी होते हैं।
2. मेज़ पर किताब रखी है।

छ. 1. जातिवाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा

ज. 1. प् + र् + द् + ऊ + ष् + अ + ण् + अ
2. प् + ए + ट् + र् + ओ + ल् + अ
3. ज् + अ + ट् + इ + ल् + अ

खंड 'स'

Page-38

झ. 1. हिदुंस्तान की ज़मीन की कई विशेषताएँ हैं। यहाँ पर गंगा, यमुना, कृष्णा, गोदावरी जैसी अच्छी नदियाँ हैं जिसके कारण अनाज, फल-तरकारियाँ, जड़ी-बूटियाँ, अनाज एवं वन पाये जाते है।

2. परमेश्वर ने हमें दो हाथ दिए हैं, बुद्धि दी है, हृदय दिया है और हम पर प्रेम बरसाकर उपकार किया है। उन्होंने हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होने दी है।

3. हम लोग ईश्वर को भूल गए हैं।

ञ. बंधनयुक्त पक्षी की पीड़ा का वर्णन है। यदि वह पिंजरे के बाहर जाती है तो उसे दाना ढूँढ़ना पड़ेगा, दाने की कमी के कारण भूखा रहना पड़ सकता है और बहेलिए का डर बना रहेगा। इस सब कठिनाइयों के बावजूद भी वह स्वतंत्र रहना चाहेगी, उसके लिए वह कोशिश करती रहेगी और आज़ादी का गाना

गाएगी जबकि पिंजरे में उसे हर प्रकार की सुविधा है लेकिन उसे गुलामी की ज़िंदगी पसंद नहीं है।

ट. 1. पिंजरबद्ध चिड़िया स्वयं को पिंजरे में कैद करना नहीं चाहती। पिंजरे में सारी सुख-सुविधाओं के बावजूद वह आज़ाद होने के लिए तब तक संघर्ष करती रहेगी जब तक कि वह पिंजरे से बाहर न निकल जाए।

2. 'संसार पुस्तक है' पत्र का उद्देश्य मानवीय सभ्यता तथा प्राकृतिक तथ्यों का बोध करवाना है।

3. मुंबई में कई स्थानों पर साइकिल प्रणाली टैक्सी के बढ़ते खर्च को देखते हुए लोकल ट्रेन और बस से गंतव्य पर जाने के उद्देश्य से शुरू की गई है। इससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा।

ठ. 1. स 2. अ

3. स 4. स

खंड 'द'

ठ. विद्यार्थी स्वयं करें।

5 इकाई-II (ध्येय)

फूल और काँटा

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-41 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. कविता का शीर्षक फूल और काँटा है।

2. कविता के रचनाकार का नाम अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' हैं।

3. फूल और काँटे की परवरिश में प्रकृति किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती क्योंकि चाँद की चाँदनी, बारिश की बूँदें तथा हवाएँ उन पर समान रूप से आती हैं। संसार धरती पर दोनों ही पौधे के रूप जन्म लेते हैं तथा एक ही पौधा उन्हें पालता है।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-41-42 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. स

3. ब 4. अ

Page-42

ख. 1. भँवरे के प्रति काँटे का व्यवहार निष्ठुर इसलिए है क्योंकि काँटा भँवरे के काले शरीर को छलनी कर देता है। उसके पर कतर देता है क्योंकि उसका स्वभाव ही ऐसा होता है।

2. फूल तितलियों को अपनी गोद में बैठने का अवसर प्रदान कर उन्हें अपना अनूठा रस पिलाकर अपना वात्सल्य भाव प्रकट करता है। वह तितलियों को खुशी प्रदान करता है, जिससे उनके दिल की कली खिल उठती है।

3. फूल जहाँ अपने सुंदर रंगों व खुशबू से दिल खुश कर देता है तथा तितली व भँवरा इसके रस का पान करते हैं, वहीं काँटा किसी की उँगली में चुभन देता है, किसी का वस्त्र फाड़ देता है और तितलियों के पंख व भँवरे के शरीर में चुभ जाता है।

4. इस कविता का भाव परोपकारिता, कोमलता, सहदयता, मित्रता का भाव तथा मानवीयता का प्रचार करना है। इसके साथ-साथ व्यक्ति को अच्छे एवं बुरे कर्मों की पहचान कराना है। किसी व्यक्ति के कर्म ही उसे महानता के शिखर पर ले जाते हैं, इसमें उसके जन्म या कुल का कोई संबंध नहीं होता है। कवि फूल और कांटे के उदाहरण से यह प्रतिपादित करना चाहते हैं कि निष्ठुर तथा हृदयहीन व्यक्ति यशस्वी कुल से संबंधित होने पर भी अपने व्यवहार के कारण लोगों में निंदनीय ही रहता है। प्रकृति की गोद में समान रूप से पोषित होने पर भी अपने कार्य-व्यवहार से काँटा सभी की आँखों में खटकता है और फूल देवों के शीश पर शोभयमान होता है।

ग. प्रस्तुत पंक्तियों में कवि यह बताना चाहता है कि निष्ठुर तथा हृदयहीन व्यक्ति यशस्वी कुल से संबंधित होने पर भी अपने व्यवहार के कारण लोगों में निंदनीय ही रहता है।

घ. उन पर एक-सी हवाएँ बहती हैं।
लेकिन समय सदैव यह दिखाता है,
उनके ढंग एक जैसे नहीं होते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-42-43 (भाषा-ज्ञान)

क.
1. मध्यम पुरुषवाचक
2. अन्य पुरुषवाचक
3. उत्तम पुरुषवाचक
4. उत्तम पुरुषवाचक

ख. कुल – वंश, सब, घर, गोत्र
प्रकृति – कुदरत, स्वभाव
वर – अच्छा, दूल्हा, पति
अलि – भँवरा, कोयल

ग. विद्यार्थी स्वयं करें।

(कौशल-परीक्षण)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. प्रकृति परोपकार का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। प्रकृति का कण-कण हमें परोपकार की शिक्षा देता है–नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं, वृक्ष धूप में रहकर हमें छाया देता है, सूर्य की किरणों से संपूर्ण संसार प्रकाशित होता है। चंद्रमा से शीतलता,समुद्र से वर्षा, पेड़ों से फल-फूल और सब्जियाँ, गायों से दूध, वायु से प्राण शक्ति मिलती है।

   पशु तो अपना शरीर भी मांसभक्षियों को खाने के लिए दे देता है। प्रकृति का यही त्यागमय वातावरण हमें नि:स्वार्थ भाव से परोपकार करने की शिक्षा देता है। भारत के इतिहास और पुराणों में परोपकार के ऐसे महापुरुषों के अनगिनत उदाहरण हैं जिन्होंने परोपकार के लिए अपना सर्वस्व दे डाला।

2. फूल और काँटे के बीच संवाद

फूल – काँटे! तुम हमेशा दूसरों को दुख क्यों पहुँचाते हो?

काँटा – क्योंकि ईश्वर ने मुझे ऐसा ही बनाया है।

फूल – हाँ, यह तो तुम ठीक ही कह रहे हो कि ईश्वर ने ही हम सबको बनाया है।

काँटा – शायद, ईश्वर मेरे माध्यम से लोगों को संदेश देना चाहता है कि वे अपने जीवन में किसी प्रकार की निंदा के पात्र न बनें।

फूल – यह तो तुमने बिलकुल ठीक बात

कही। हमारे द्वारा ही ईश्वर लोगों को कुछ संकेत देना चाहता है।

3. कविता

पानी आया.... पानी आया....
गरज रहे बादल घनघोर
ठुमक-ठुमक कर नाचे मोर
पी-पी रटने लगा पपीहा
झन-झन-झन झींगुर का शोर
दूर कहीं मेढक टर्राया
पानी आया....पानी आया...
रिमझिम-रिमझिम बूँदे आईं
खुशियों की सौगातें लाईं
पेड़ों के पत्तों ने भरभर
झूम-झूम तालियाँ बजाईं
गरमी का हो गया सफ़ाया
पानी आया.... पानी आया.....
भीग रहे कुछ छाता ताने
रानू-मोनू लगे नहाने
छप-छप-छप-छप करते फिरते
सपने जैसे हुए समाने
बच्चों का मन है हर्षाया
पानी आया....पानी आया....

6 एलबम

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-51 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. पंडित शादीराम एक ईमानदार व्यक्ति थे। वे अपना पेट काटकर एक-एक पैसा जोड़ते थे और अपने यजमान लाल सदानंद का ऋण उतारना चाहते थे।
2. पंडित जी के पास रुपए एलबम के द्वारा आए। उनके इस काम में लाला सदानंद ने मदद की। पंडित जी की तरफ़ से विज्ञापन दिया गया तथा लाल सदानंद ने स्वयं ही कोलकाता का मारवाड़ी सेठ बनकर एक हज़ार रुपय में एलबम खरीद लिया जिससे पंडित शादीराम ऋण मुक्त हो गए
3. इस कहानी का शीर्षक 'एलबम' की सार्थकता को हम इस प्रकार सिद्ध कर सकते हैं कि इसी एलबम की मदद से पंडित शादीराम ने अपना कर्ज उतारा था। इस नेक काम में मदद भी लाला सदानंद ने की। इस कहानी का अन्य शीर्षक 'परोपकारी सदानंद' हो सकता है।।
4. **क.** पंडित शादीराम के लिए पैसा सच में मोहर के बराबर था क्योंकि वह पेट काटकर पैसा बचाते थे। उनके लिए एक-एक पैसा जमा हो पाना भी बहुत बड़ी बात हो जाती थी। पंडित शादीराम के पास जब चार पैसे जमा हो जाते तो कोई ऐसा खर्च निकल आता, जिससे सारे पैसे उड़जाते थे।

   ख. इस पंक्ति से यह आशय स्पष्ट होता है कि जैसे हम किसी वस्तु के बारे में जानने के लिए उतावले रहते हैं और उसकी प्रतीक्षा में पूरा-पूरा दिन निकाल देते हैं वैसे ही कहानी में

पंडित शादीराम हर समय डाकिये की प्रतीक्षा करते रहते हैं। वे रोज़ सोचते कि आज कोई चिट्ठी आएगी। दिन बीत जाता और कोई चिट्ठी नहीं आती थी। रात को आशा, सड़क की धूल की तरह बैठ जाती थी।

ग. प्रस्तुत पंक्ति यह दर्शाती है कि जिस तरह हम पर किसी का ऋण होता है और हम जब तक उसे चुकाते नहीं तब तक मन का भार बना रहता है और ऋण चुकाने पर मन हल्का हो जाता है, उसी तरह पंडित शादीराम के सिर पर भी ऋण चुकाने का भार है। पंडित शादीराम का मन भी– लाला सदानंद का ऋण चुकाने पर ही हल्का हुआ था।

Page-51-52 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. ब

3. ब

ख. 1. पंडित शादीराम चाहकर भी कर्ज़ इसलिए नहीं चुका पा रहे थे क्योंकि जब भी पैसे जमा होते तो कोई ऐसा खर्च निकल आता, जिससे सारे पैसे उड़ जाते।

2. लाला सदानंद ने कई सुंदर और रंगीन चित्र पुरानी पत्रिका में देखे और बोले कि ये चित्रकला के बढ़िया नमूने हैं। अगर किसी शौकीन को पसंद आ जाएँ तो हज़ार–दो हज़ार रुपए बड़ी आसानी से कमा सकते हैं। उन्होंने पंडित शादीराम की तरफ़ से स्वयं ही विज्ञापन देने का सुझाव दिया।

3. पंडित जी ने सोचा था – 'अगर दो हज़ार रुपए लिख देता तो शायद उतने ही मिल जाते।' इस सोच ने उनकी सारी खुशी किरकिरी कर दी। इससे मानव स्वभाव की 'लालची वृत्ति' का बोध होता है, क्योंकि उन्हें एक हज़ार रुपये मिलने पर संतोष नहीं होता।

4. पंडित शादीराम इस विचार से बहुत प्रसन्न थे कि उन्होंने सदानंद का ऋण उतार दिया है। लेकिन जब वह एलबम पंडित शादीराम ने लाला सदानंद के पास देखी तो उनके हृदय को चोट-सी लगी कि ऋण उतरा नहीं है बल्कि पहले से दुगुना हो गया है। उन्हें एलबम खरीदने की सच्चाई मालूम हो चुकी थी और लाला सदानंद पहले से अधिक सज्जन और अधिक उपकारी लगने लगे।

5. इस कहानी में लाला सदानंद की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

- लाला सदानंद एक बहुत ही अच्छे इनसान थे। वे दूसरे की विवशता को समझते थे तथा उनकी भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना समस्या का समाधान कर लेते थे।
- लाला सदानंद अपने से पहले दूसरों के बारे में सोचते थे।
- लाला सदानंद का स्वभाव दूसरों के प्रति बहुत अच्छा था।
- लाला सदानंद सदैव आर्थिक संकट में सबकी मदद करते थे।

ग. 1. पंडित जी को लाला सदानंद के पाँच सौ रुपये देने थे।

2. पंडित जी दिनभर तसवीरें छाँटते रहे।

3. लाला सदानंद ने समाचार पत्रों में

विज्ञापन दिया।

4. एक मारवाड़ी सेठ ने एलबम मँगवाई।

5. पंडित जी को रोगी के सिरहाने कोई चुभती चीज़ जान पड़ी।

6. एलबम लाला सदानंद ने खरीद ली थी।

घ. 1. पंडित शादीराम को यह आशा नहीं थी कि कोयले की खान में हीरा मिल जाएगा।

2. घोर निराशा के कारण सभी संभावनाएँ समाप्त होने के बारे में कहा गया है।

3. पंडित जी दिनभर तसवीरें छाँटते रहे।

4. पंडित जी को चित्र बढ़िया नज़र आ रहे थे।

Page-53

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

अध्यापक विद्यार्थियों से स्वयं करने के लिए कहें। विद्यार्थियों को स्वयं करने के लिए कहें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. मनोज ऊपर चढ़ा।

2. सीता धीरे-धीरे चली।

3. निशंक उत्साहपूर्वक दौड़ा।

4. गाड़ी देर से आई।

5. सम्राट बाहर गया।

ख. 1. कि 2. जब, तब

3. और 4. मानो

5. जो, उसे

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. एक सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य का ये कर्तव्य है कि वह अपने साथ दूसरों के हित के बारे में भी सोचे। जीवन के हर पड़ाव पर हमें दूसरों की सहायता की आवश्यकता होती है। एक अकेला व्यक्ति चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। जीवन निर्वाह के लिए भी हम दूसरों पर आश्रित रहते हैं। ऐसी हालत में हम दूसरों का भी महत्व जानकर उनके काम आयें तो, सबका निर्वाह सुचारू रूप से हो सकता है। ऐसा करने से जिस सुख और आनंद की प्राप्ति होती है, उसे शब्दों में भी बयां कर पाना मुमकिन नहीं होता। इसलिए कहा गया है कि दूसरों की मदद करने में सच्चा सुख मिलता है।

Page-54 (विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. परहित सरिस धर्म नहिं का अर्थ हुआ – परहित ही इस लोक में सर्व उन्नति का कारण है और मृत्यु होने पर आवागमन से छुटकारा प्राप्त करने का साधन है। यह पंक्ति गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस से ली गई है। इसमें भगवान श्री राम भरत की विनती पर साधु और असाधु का भेद बताने के बाद कहते हैं–'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' अर्थात दूसरों की भलाई के समान अन्य कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है। स्वार्थ निरपेक्ष रहकर दूसरों के हितार्थ कार्य करना परहित है। पारस्परिक विरोध की भावना घटाना और प्रेम भाव बढ़ाना परहित है। दीन, दुखी, दुर्बल की सहायता परहित है। आवश्यकता पड़ने पर निस्वार्थ भाव से दूसरों को सहयोग देना, मन, वचन और कर्म से समाज का मंगल साधन परहित है।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

7 डेंगू बुखार

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-59 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. शिरीष के बारे में अध्यापिका ने विद्यार्थियों को बताया कि शिरीष को डेंगू बुखार हो गया है। कल ही उसके पिताजी प्रधानाध्यापिका को छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र देने आए थे।
2. साधारण डेंगू बुखार में अचानक तेज़ बुखार के साथ सिर दर्द, मांसपेशियों और जोड़ों में तेज़ खिंचाव और बदन दर्द होता है। मुँह का लार्वा प्रभावित होने से स्वाद खत्म हो जाता है, भूख नहीं लगती, बिना किसी कारण पेट में असहनीय दर्द होता है। इस रोग में इतनी पीड़ा होती है, जैसे रोगी की हड्डियाँ ही टूट गई हो। रोगी को बहुत अधिक कमज़ोरी महसूस होती है। गला सूखने लगता हैं। इन सबके साथ रोगी शरीर पर लाल-गुलाबी रंग के चकत्ते बनने लगते है।
3. शॉक सिंड्रोम डेंगू की सबसे गंभीर अवस्था है, जिसमें कँपकँपाहर के साथ मरीज़ को पसीना आता है। इसमें खतरनाक रूप से निम्न रक्तचाप भी हो सकता है। जिस स्थिति में आने तक लाल चकत्ते के निशान स्थायी हो जाते हैं, जिनमें खुजली भी होने लगती है। शॉक सिंड्रोम में चिकित्सा की देरी मरीज की जान भी ले सकती है।
4. डेंगू से बचने के लिए वैज्ञानिक वैक्सीन बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. स
3. ब 4. द

Page-60

ख. 1. ✗ 2. ✓
3. ✗ 4. ✓

ग. 1. डेंगू बुखार साफ़ पानी में पनपने वाले एडीज़ इजिप्टी मच्छर के काटने से हो जाता है। यह मच्छर दिन में काटता है और रक्त में संक्रमण होने से पाँच से छह दिनों के भीतर ही शरीर पर अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर देता है।

2. हैमरेजिक डेंगू बुखार में नाक, मुँह और दाँतों में रक्तस्राव के साथ तेज़ बुखार हो जाता है। इसमें बुखार 105 डिग्री फॉरेनहाइट तक पहुँच सकता है, जिसका सीधा प्रभाव मस्तिष्क पर पड़ता है। इसमें डी.एच.एस. पॉज़िटिव जाँच के बाद मरीज़ को प्लेटलेट्स चढ़ाने की ज़रूरत होती है।

3. जब मादा मच्छर किसी ऐसे व्यक्ति को काट ले जो डेंगू रोग से पीड़ित है तो मच्छर को डेंगू वापस मिल सकता है। सर्वप्रथम यह वायरस मच्छर के पेट की कोशिकाओं में रहता है। लगभग आठ-दस दिनों में यह वायरस मच्छर की लाल ग्रंथियों को संक्रमित कर देता है। जब मच्छर मानव को काटता है तो इसकी लार मानव को संक्रमित कर सकती है।

4. डेंगू जैसी बीमारी से बचाव हेतु हमें अनेक प्रकार की सावधानियाँ बरतनी चाहिए–जैसे ठहरा हुआ साफ़ पानी मच्छरों को आकर्षित करता है। ठहरे

हुए पानी को खुले पात्रों में भरकर नहीं रखना चाहिए। यदि रखना आवश्यक हो तो उसे बदलते रहना चाहिए। यह मच्छर दिन में काटता है। इससे बचने के लिए शरीर को पूरी तरह ढकने वाले कपड़े पहनने चाहिए। मच्छरों से बचने के लिए कीटनाशक दवा का छिड़काव किया जा सकता है।

5. डेंगू के मरीज़ को ताज़े फलों का रस और तरल पदार्थों का सेवन करना चाहिए।।

घ. **1.** अध्यापिका ने, गौरी से

2. आदित्य ने, अध्यापिका से

3. अध्यापिका ने, राघव से

4. निशु ने, अध्यापिका से

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. स्कूल, मैडम, डेंगू, एडीज़ इजिप्टी, हैमरेजिक, शॉक सिंड्रोम, फॉरनेहाइट, प्लेटलेट्स, एस्प्रिन, डिस्प्रिन, क्रोसिन, डॉक्टर, वैक्सीन आदि।

ख. 1. प्रभाव + इत 2. पीड़ा + इत

3. संक्राम + इत 4. संभव + इत

5. लिख + इत 6. घृणा + इत

Page-61

ग. 1. शिरीष आज भी नहीं आया।

2. शिरीष को डेंगू बुखार हो गया।

3. मुझे शिरीष की बहुत चिंता हो रही है।

4. शॉक सिंड्रोम में चिकित्सा की देरी मरीज़ की जान भी ले सकती है।

5. डेंगू वायरस से बचाव के लिए अभी तक कोई वैक्सीन नहीं है।

घ. 1. तुमने खाना खा लिया।

2. खाना मेज के ऊपर रखा है।

3. चिड़िया दाना चुग रही है।

4. तुम सब खेल रहे हो।

5. तुम अपनी किताब मुझे दे दो।

(कौशल-परीक्षण)

1. मलेरिया मादा एनाफिलीज मच्छर के काटने से फैलने वाला रोग है, जिसमें ठंड लगकर तेज़ बुखार आता है; लेकिन ये लक्षण रोग फैलाने वाले प्लाजमोडियम के प्रकार के अनुसार बदल भी सकते हैं। कई मामलों में बुखार एक दिन छोड़कर आता है। यह एक संक्रामक बुखार है जिसमें निश्चित समय के अंतर से ठंड के साथ बुखार चढ़ता है और पसीना आकर उतर जाता है। इसका बुखार एक, दो, तीन, चार दिन का अंतर देकर लगातार आता है, लेकिन कभी-कभी रोज़ भी आ सकता है। ये रोग मच्छरों की सभी प्रजातियों द्वारा नहीं फैलाया जाता, बल्कि मादा एनाफिलीज इसके लिए ज़िम्मेदार होती है।

- मच्छरों से बचें। वहाँ सोएँ जहाँ मच्छर न हों या कपड़ा ओढ़कर सोएँ।
- शरीर पर सरसों का तेल लगाएँ। इससे मच्छर नहीं काटते।
- मच्छरों और लार्वा को खत्म कर दें। मच्छर रुके हुए पानी में पैदा होते हैं। आस-पास के टूटे हुए बरतनों को हटा दें। तालाब या दलदल को साफ करें या उन पर थोड़ा सा मिट्टी का तेल या पेट्रोल डालें।
- घर के आसपास गड्ढों तथा पानी के इकट्ठा होने वाले स्थानों को समतल कर दें।
- छत की टंकी और कूलर इत्यादि का पानी सप्ताह में एक बार ज़रूर बदलें। इससे भी मच्छरों के प्रजनन पर रोक लगाई जा सकती है।

- कीटनाशकों का छिड़काव मच्छर पैदा होने वाले स्थानों में तथा घरों में करवाएँ। आजकल डी.डी.टी., बी.एच.सी. की जगह पाइरेथाइड का छिड़काव किया जाता है, जो बहुत असरकारक है (लेकिन इससे सावधानी भी रखें)।
- मच्छरों पर नियंत्रण ही मलेरिया पर नियंत्रण है क्योंकि मच्छर रोग के परजीवियों के वाहक होते हैं। अतः बेहतर है कि इन्हें पनपने से रोका जाए।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

5. **स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र**

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी महोदय
A–58 प्रीत विहार
दिल्ली–110092
दिनांक : 24 जुलाई 20XX
पूर्वी पश्चिमी क्षेत्र
मान्यवर,

अपने इस पत्र के द्वारा मैं आपका ध्यान सफ़ाई के अभाव में अपने क्षेत्र की दुर्दशा की ओर दिलाना चाहता हूँ। पिछले कई सप्ताहों से नगर निगम का कोई भी सफ़ाई कर्मचारी यहाँ सफ़ाई करने के लिए नहीं आया, इसलिए जगह–जगह कूड़े के ढेर लगे पड़े हैं। आवारा पशु मुँह मारकर गंदगी को चारों ओर फैला रहे हैं। सीवरों की सफ़ाई भी काफ़ी समय से नहीं हुई है। उनसे निकला गंदा पानी कूड़े के ढेरों से मिलकर दुर्गंध फैला रहा है। चारों ओर मक्खियों–मच्छरों का राज हो रहा है। बरसात शुरू होने वाली है। यदि इस क्षेत्र की शीघ्र सफ़ाई न हुई तो यहाँ की क्या दुर्दशा होगी, आप आसानी से अनुमान लगा सकते हैं। हमें आशा है कि आप हमारा अनुरोध स्वीकार कर तुरंत कार्यवाही करेंगे।

सधन्यवाद!
भवदीय
देवेंद्र बघेल

8 प्रायश्चित

(अभ्यास–उत्तर)

पाठ–बोध

Page-69 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. रामू की बहू ने बिल्ली को मारने के लिए एक कटोरा दूध कमरे के दरवाज़े पर रखा। उसके बाद रामू की बहू ने हाथ में पाटा लिया और दूध पीती बिल्ली पर पटक के मारा। पाटा की चोट से बिल्ली बिना हिले–डुले और चीख़े–चिल्लाए ज़मीन पर उलट गई।
2. बिल्ली की हत्या का समाचार सुनकर पंडित परमसुख मुस्कुराए और कहा, "रामू की माँ, चिंता की कौन–सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं। शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सो प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो जाएगा।"
3. जब पंडित परमसुख ने प्रायश्चित का खर्चा जैसे– ग्यारह तोले का सोना, पूजा की सामग्री, दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक

मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार पसेरी घी और मन-भर नमक के अतिरिक्त इक्कीस दिन पाठ के इक्कीस रूपये और पाँच ब्राह्मणों का भोजन रामू की माँ को बताया तब उनकी बात को सुनकर रामू की माँ ने ऐसा कहा।

4. कहानी का शीर्षक प्रायश्चित इसलिए रखा गया होगा क्योंकि पंडित परमसुख बिल्ली की हत्या के अपराध में रामू की माँ को इतना अधिक खर्च बता देते हैं जो कि उसकी क्षमता के बाहर है। पंडित जी प्रायश्चित के नाम पर ही पहले इक्कीस तोले की सोने से बनी बिल्ली को दान देने की बात करते हैं। जो बाद में घटकर ग्यारह तोले हो जाता है और अन्य खर्च अलग। रामू की बहू के बहाने से पंडित सुखराम रामू की माँ को लूटते हैं। अत: पूरी कहानी ही प्रायश्चित के इर्द-गिर्द घूमती है।

Page-69-70 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. द 2. स
3. अ 4. अ

ख. 1. ✓ 2. ✗
3. ✗ 4. ✓
5. ✗ 6. ✓

ग. 1. रामू की बहू ने कबरी बिल्ली को मारने का निश्चय इसलिए किया क्योंकि कबरी ने घर में बहुत आतंक मचा रखा था। कभी वह भंडार घर में घुस जाती, कभी घी खा जाती, कभी खीर खाती तो कभी दूध पी जाती। कबरी बिल्ली ने रामू की बहू की नाक में दम कर रखा था, इसलिए रामू की बहू ने उसे मारने का निश्चय किया थी।

2. पंडित परमसुख छोटे और मोटे आदमी थे। लंबाई चार फुट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, मुँछें बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँचती थी।

3. पंडित सुखराम के अनुसार प्रात: काल ब्रहम् मुहूर्त में बिल्ली की हत्या होने के कारण रामू की घोर कुमीपाक नरक मिलने की संभावना बताई थी और उन्होंने इस बात को इस ढंग से कहा कि रामू की माँ डर गई और लालची पंडित से प्रायश्चित का उपाय पूछने लगी।

4. पंडित जी ने प्रायश्चित के लिए उपाय बताया कि एक इक्कीस तोले सोने की बिल्ली बनवाकर बहू से दान करवा दी जाए और बिल्ली दान देने के बाद इक्कीस दिन का पाठ भी कराया जाए। इक्कीस दिन पाठ के इक्कीस रूपये दिए जाए। दोनों समय पाँच ब्रह्मणों को भोजन करवाया जाए तथा दान-दक्षिणा में दस मन गेहूँ, एक मन चालव, एक मन दाल, मन-भर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार पसेरी घी, और मन-भर नमक दिए जाए तभी रामू की बहू को इस पाप से मुक्ति मिलेगी

5. पंडित परमसुख लालची तथा स्वार्थी व्यक्ति थे। वे धर्म-कर्म के नाम पर लोगों को लूटकर उनकी मज़बुरी का फ़ायदा उठाते थे। वे बातचीत द्वारा दूसरों को प्रभावित करते थे तथा लोगों की अर्थिक क्षमता को देखकर उनका खर्च बताते थे।

6. पाठ के आधार पर रामू की बहू और रामू की माँ की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

रामू की बहू की विशेषताएँ

- रामू की बहू कबरी बिल्ली से बहुत घृणा करती थी।
- रामू की बहू बहुत ही नादान थी। वह केवल चौदह वर्ष की बालिका थी।
- रामू की बहू अपनी सास की दुलारी थी। उसमें सेवा भाव था।

- उसने ज़ल्दी ही सास को प्रभावित कर लिया और घर की चाबी उसकी करधनी में लटकने लगी।
- उसमें सहनशक्ति थी तभी पड़ोस की औरतों को मिसरानी, महरी को कुछ नहीं कहती है।

रामू की माँ की विशेषताएँ

- रामू की माँ धार्मिक स्वभाव की थीं।
- रामू की माँ धर्म के प्रति अंध श्रद्धा रखती थीं।
- वह अपनी बहू को प्यार करती थी तथा प्रायश्चित कराने के लिए पंडित द्वारा बताए गए खर्चे को वहन करने के लिए तैयार थी।

घ. 1. पंडित जी ने, रामू की माँ से

2. पंडित जी ने, रामू की माँ से

3. मिसरानी ने, पंडित जी से

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. कबरी बिल्ली के घर में आंतक मचाने से, रामू की बहू की जान आफ़त में आ गई थी।

2. रामू की बहू खाने में जो भी बनाती कबरी बिल्ली उसे सफ़ाचट कर जाती।

3. रामू की बहू के सर पर कबरी बिल्ली को मारने का खून सवार था।

4. रामू की बहू ने कबरी की हत्या पर कमर कस ली।

5. महरी के द्वारा पंडित को बुला लेने पर सास की जान में जान आई।

6. पड़ोस की औरतों का रामू के घर में ताँता बँध गया।

7. रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या कर दी थी जिस कारण सबको काम के चक्कर में नाच नाचना पड़ गया।

8. रामू की माँ ने आँखें फाड़कर पंडित परमसुख को देखा और कहा इक्कीस तोला सोना, पंडित जी यह तो बहुत है, तोले भर की बिल्ली से काम न निकलेगा।

Page-71

ख. 1. महरी बोली, "अरे राम! बिल्ली तो मर गई।''

2. "अरे हाँ, जल्दी से दौड़कर के पंडित जी को बुला ला।"

3. "पंडित जी, बिल्ली की हत्या करने से कौन-सा नरक मिलता है?"

4. "हरे कृष्ण! हरे कृष्ण! बड़ा बुरा हुआ।"

5. रामू की माँ ने घबराहट में कहा, "अरी, क्या हुआ री?"

ग. 1. पंडित की बात खत्म नहीं हुई होगी।

2. प्रायश्चित से सब कुछ ठीक हो गया था।

3. मौका हाथ आता है।

घ. स्वादिष्ट, मुश्किल,
बाँसुरी, ब्रह्म मुहूर्त,
श्रद्धा, ब्राह्मण

(कौशल-परीक्षण)

1. प्रायश्चित कहानी समाज में फैले अंधविश्वास, धार्मित पाखंडता, रिश्वतखोरी, और एक परिवार की रूढ़िवादिता जैसी समस्याओं की ओर संकेत करती है। ये समस्याएँ आज भी हमारे समाज में नज़र आती है क्योंकि आज के समय में मनुष्य का एकमात्र लक्ष्य केवल धन को अर्जित करना है जिसके लिए वह किसी भी मार्ग को अपनाने के लिए उतारू रहता है। इन समस्याओं को दूर करने का एकमात्र उपाय यही है कि हम अंधविश्वास और समाज में बैठे पाखंडियों से स्वयं को दूर रखें और अन्य लोगों को भी इन समस्याओं के

प्रति सचेत रहने के लिए प्रेरित करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-72

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

अर्धवार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र

खंड 'अ'

Page-74

क. 1. स 2. अ

3. स

4. अ. परिश्रम ब. प्रभावशाली तेजपूर्ण

5. अपना धाक जमाना या अपना प्रभुत्व स्थापति करना।

खंड 'ब'

ख. 1. दुर्लभ 2. उऋण

3. विकर्षण

ग. 1. पवन, समीर 2. जननी, माँ

3. धरा, भूमि

घ.

अनुस्वार	**अनुनासिक**
मंदिर	गाँव
अंधकूप	रेखाएँ
संगीत	माँ

Page-75

ङ. 1. **ठंडी साँस भरना**- आह भरना

रामू ने ठंडी साँस भरकर कहा 'ईश्वर बड़ा ही दयालु है।'

2. **बात का बतंगड़** जरा-सी बात को बढ़ा देना-

ज़रा सी बात का बंतगड़ बन जाने से मामूली सा झगड़ा अदालत तक जा पहुँचा।

3. **सिर पीटना**-अपना अहित स्वयं करना, पछताना-

घनशाम ने अपनी बेवकूफ़ी पर सिर पीट लिया।

च. 1. अपादान कारक

2. सम्प्रदान कारक

3. संबंध कारक

छ. 1. कूप 2. अस्थि

3. ग्राम

ज. 1. कि 2. तब

3. आज

झ. 1. उड़ान 2. थकावट

3. मिलावट

ञ. 1. ज् + ई + व् + अ

2. य् + आ + त् + र् + आ

3. प् + अ + श् + उ

ट.

	मूल शब्द	**उपसर्ग**
1.	भाव	प्र
2.	कास	नि
3.	तुल	अ

खंड 'स'

ठ. 1. डेंगू के मरीज को ताज़े फलों का रस और तरल पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

2. डेंगू के वायरस मादा मच्छर के पेट की कोशिकाओं में रहते हैं।

3. जब मादा मच्छर डेंगू से पीड़ित व्यक्ति को काट लेती है तब डेंगू का वायरस मच्छर के पेट की कोशिकाओं में

वापस पहुँच जाता हैं।

4. हाँ, नर मच्छर भी डेंगू फैलाते हैं।

5. डेंगू की रोकथाम के लिए पानी को खुले पात्रों में नहीं रखेंगे। शरीर को पूरी तरह से ढकने वाले वस्त्र पहनेंने, आस-पास का वातावरण स्वच्छ रखेंगे। समय-सयम पर कीटनाशक दवा का छिड़काव करेंगे। सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करेंगे।

Page-76

ड. 1. कवि का नाम सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और कविता का नाम मुक्ति की आकांक्षा है।

2. दाने का टोटा से अर्थ है–'अनाज का अभाव' या 'दाने की कमी'।

3. चिड़िया मुक्ति का गीत इसलिए गाती है क्योंकि उसे बंधन पसंद नहीं है।

4. पिंजरा टूटने या खुलने पर चिड़िया स्वतंत्र होकर आकाश में विचरण करेगी।

5. पदयांश में स्वतंत्रता के महत्त्व को दर्शाया गया है।

ढ़. 1. जब पंडित शादीराम को यह पता चला की एलबम मारवाड़ी सेठ के बजाय लाला सदानंद ने खरीद ली है, तब वे समझ गए कि पहले का कर्ज तो अदा नहीं हुआ और इस एलबम के लिए दिए गए पैसों के रूप में कर्ज बढ़कर दुगुना हो गया।

2. आचार्य बिनोबा भावे के अनुसार गाँव को परिवार एक दूसरे की मदद करके बनाया जा सकता है।

3. दैनिक जीवन में तेल और गैस दोनों की हमारे लिए बहुत आवश्यकता है। धरती का दोहन करके हमने अनेक चीजें प्राप्त की हैं। तेल और गैस मानव की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। वस्तुत: ये दोनों हमें विरासत में मिली ऐसी धरोहर हैं जिनका संरक्षण करके आनेवाली पीढ़ियों को देना हमारा गंभीर दायित्व है लेकिन हम इस दायित्व को साधारण मानते हैं। हमें लगता है कि अपने खून-पसीने की गाढ़ी कमाई से इन्हें खरीदते हैं तो इन पर हमारा अधिकार है।

4. डेंगू जैसी बीमारी से बचाव हेतु हमें अनेक प्रकार की सावधानियाँ बरतनी चाहिए- जैसे ठहरे हुआ साफ पानी मच्छरों को आकर्षित करता है। ठहरे हुए पानी को खुले हुए पात्रों में भरकर नहीं रखना चाहिए। यदि रखना आवश्यक हो तो उसे बदलते रहना चाहिए। डेंगू के मच्छरों से बचने के लिए शरीर को पूरी तरह से ढकने वाले कपड़े पहनने चाहिए।

5. पंडित परमसुख छोटे और मोटे आदमी थे। लंबाई चार फुट और दस इंच और तोंद का घेरा अठ्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, मूँछें बड़ी-बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँचती थी।

ण. 1. 'फूल तथा काँटा' कविता का मुख्य भाव यह है कि निष्ठुर तथा हृदयहीन व्यक्ति यशस्वी कुल से संबंधित होने पर भी अपने व्यवहार के कारण लोगों में निंदा का पात्र बनता है।

2. चिड़िया को पिंजरे के भीतर अनेक तरह की सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं। प्यास लगने पर कटोरी में जल तथा भूख लगने पर चुगने के लिए दाने उपलब्ध हैं। उसे पिंजरे में शिकारी का भी डर नहीं है। वह बिल्कुल स्वच्छंद होकर चहचहा सकती है। अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर सकती है।

त. 1. भगवान शिव अर्थात् कल्याणकारी

2. बेहोश 3. अनिष्टकारी बात

4. ज़हरीला 5. घबराया-सा

थ. 1. 'फूल और काँटे' कविता के कवि का नाम अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' है।

2. बिल्ली के जीवित होने की खबर से लालची पंडित परमसुख की सारी योजना धरी की धरी रह गई।

3. पं॰ नेहरू ने अपने पत्र में संसार को संतान के प्रति प्रेम, तथा ज़िम्मेदारी का बोध, प्रकृति-प्रेम, प्रकृति को जानने-समझने की क्षमता का विकास करने के साथ-साथ मानवीय सभ्यता का रूपक प्रदान किया है।

4. पंडित जी को रोगी के सिरहाने के नीचे से एलबम मिला।

खंड 'द'

द. विद्यार्थी स्वयं करें।

ध. बी-109

बल्लिवाला चौक,

देहरादून, उत्तराखंड

प्रिय छोटे भाई अंकुश,

आशा है, तुम छात्रावास में आनंदपूर्वक होगे। हम यहाँ सदा तुम्हारी चिंता में रहते हैं। पिता जी को सदा तुम्हारी पढ़ाई की चिंता लगी रहती है। मैं उन्हें यही विश्वास दिलाता रहता हूँ की तुम मन लगाकर पढ़ाई कर रहे होगे। इसलिए उसकी पढ़ाई की चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

प्रिय भाई! मेरी तुम्हें सलाह है कि छात्रावास के ये दिन दुर्लभ हैं। ये दिन लौटकर नहीं आएँगे। अतः ध्यान रहे कि अध्ययन का कोई अवसर छूटने ना पाए। मन लगाकर पढ़ना। किसी प्रकार की कोई जरूरत हो तो मुझे बताना। पढ़ाई के साथ अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना।

तुम्हारा बड़ा भाई

अभय

9

इकाई-III (आमोद-प्रमोद)

रसखान के सवैये

(अभ्यास-उत्तर)

काव्य-बोध

Page-79 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. रसखान खग के रूप में यमुना के तट पर कदंब के वृक्ष पर बसेरा करना चाहते हैं।

2. अहीर की छोरियाँ कृष्ण को छेड़ती हैं तथा कटोरे भर मट्ठे के लिए उन्हें इधर-उधर नचाती रहती हैं। उन्हें श्रीकृष्ण को नचाने में मज़ा आता है।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. ब

3. ब 4. स

5. स

Page-80

ख. **1.** पहले सवैये में रसखान जी ने अपने आराध्य देव से यह प्रार्थना की है कि यदि उनका अगला जन्म होता है तो वे गोकुल के ग्वालों और गायों के बीच रहें। पशु के रूप में यदि जन्म लें तो नंद की गायों के साथ चरते रहें। यदि पत्थर बनें तो उस गोवर्धन पर्वत के रूप में जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उँगली पर उठाया और पक्षी के रूप में यदि जन्म लें तो

यमुना-तट पर कदंब के वृक्ष पर बैठें। ऐसा वे इसलिए चाहते हैं क्योंकि वे अपने आराध्य देव की ब्रज भूमि से ही जुड़े रहना चाहते हैं।

2. देव तथा वेदों में कृष्ण को अनादि, अनंत, अखंड, अछेद्य व अभेद बताकर उनकी महिमा का गान किया गया है।

3. अंतिम सवैये में कृष्ण के बाल रूप का वर्णन किया गया है। उनके साँवले शरीर पर धूल लगी हुई सुंदर लग रही है तथा सिर पर चोटी शोभा पा रही है। वे आँगन में खेलते-खाते हुए नंगे पाँव घूम रहे हैं। उन्होंने पीले रंग की लँगोटी पहनी हुई है। पैंजनी बजाते हुए।

4. रसखान ने कौए को भाग्यशाली इसलिए कहा है क्योंकि उसे श्रीकृष्ण के हाथ से माखन रोटी छीनकर खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क.

1.	ग्राम	2.	काक
3.	खग	4.	हस्त
5.	पीत	6.	मानुस
7.	पाहन	8.	मस्तक

ख.

1.	आदमी, मनुज	2.	ग्राम, देहात
3.	खग, विहग	4.	धेनु, सुरभि
5.	उपवन, बगीचा	6.	काग, काक
7.	पर्वत, पहाड़		

ग.
1. कालिंदी कूल कदंब की डारन।
2. जाहि अनादि अनंत अखंड, अछेद अभेद सुबेद बतावैं।
3. पचिहारे तू पुनि पार न पावैं।
4. वारत काम कला निधि कोटि।

Page-81

घ.

2.	पावैं, बतावैं	3.	कारन, डारन
4.	कछोटी, कोटी	5.	मँझारन, कारन
6.	अभेद, सुबेद		

(कौशल-परीक्षण)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।

10 भोलाराम का जीव

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-89 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. चित्रगुप्त की परेशानी का कारण भोलाराम के जीव का लापता होना था। उसने पाँच दिन पूर्व ही देह त्यागा था। जब उसके जीवन को दूत लेकर आ रहा था तब वह जीव रास्ते में चकमा देकर भाग गया। सारे ब्रहमांड को छानने के बाद भी वह कहीं नहीं मिला। चित्रगुप्त को डर हुआ कि अगर ऐसा हुआ

तो पाप–पुण्य का भेद मिट जाएगा। वह जीव इस लोक में अभी तक नहीं पहुँचा।

2. भोलाराम की आर्थिक स्थिति अत्यंत कमज़ोर थी। उसे पाँच साल से पेंशन नहीं मिल रही थी। पेंशन के अभाव में स्त्री के सब गहने बर्तन बिक गए थे। उसकी आमदनी का अन्य कोई ज़रिया नहीं था।

3. सरकारी दफ़्तर में जाने का नारद जी का अनुभव बहुत खराब रहा। उन्होंने पहले कमरे में बैठे बाबू से भोलाराम के केस के बारे में बातें की। उस बाबू ने उन्हें दूसरे के पास, दूसरे ने तीसरे के पास, तीसरे ने चौथे के पास भेजा। सभी ने फाइल पर पेपर वेट अर्थात् रिश्वत रखने की बात कही। चपरासी ने भी नारद को रिश्वत देने की बात कही और नारद जी भी इसके प्रभाव से न बच सके। उन्हें भी अपनी वीणा देकर ही भोलाराम की फाइल माँगवानी पड़ी।

4. सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार के कारण नारद जी को भोलाराम की फाइल मँगवाने हेतु अपनी वीणा रिश्वत के रूप में देनी पड़ी।

5. भोलाराम ने कई वर्षों तक पेंशन पाने के लिए संघर्ष किया। कई दरख्वास्तें दीं, किंतु रिश्वत न दे पाने के कारण उसकी पेंशन मंजूर नहीं हुई। यही कारण था कि मरने के बाद भी उसका जीव दरख्वास्त की फाइल में छिपा था।

Page-89-90 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. (द) 2. (स)

3. (ब) 4. (अ)

ख. 1. चित्रगुप्त द्वारा भोलाराम के जीव के बारे में पूछे जाने पर यमदूत हाथ जोड़कर बोला, "दयानिधान, मैं कैसे बताऊँ कि क्या हो गया? आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा जारी की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया। इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्मांड छान डाला पर उसका कहीं पता नहीं चला।"

2. चित्रगुप्त ने धर्मराज को भ्रष्टाचार के व्यापार के बारे में बताया कि महाराज आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चल रहा है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं जिन्हें रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौज़री के पार्सलों के मोज़े रेलवे अफ़सर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे-के-डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं।

राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बंद कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने, मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया?

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए अपनी यह प्रतिक्रिया दी कि तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र हो गई। भला भोलाराम जैसे नगण्य दीन आदमी से किसी का क्या लेना–देना।

3. धर्मराज ने देवर्षि नारद को नरक में निवास स्थान की समस्या हल होने के बारे में यह बताया कि नरक में पिछले सालों में बड़े–बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई इमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनाई। बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। कुछ लोग वे भी हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाज़िरी भरकर पैसा हड़पा जो कभी काम पर गए ही नहीं। उन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई

इमारतें बना दी हैं।

4. भोलाराम की पत्नी ने नारद जी को अपने पति की मृत्यु के बारे में बताया कि पाँच सालों से पेंशन नहीं मिली थी। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था और आता, तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेचकर हम खा गए फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फ़ाके होने लगे थे। चिंता में घुलते-घुलते और भूख से मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

5. भोलाराम को पाँच सालों से पेंशन इसलिए नहीं मिली थी क्योंकि उसने सरकारी अफ़सरों को रिश्वत नहीं दी थी। इससे सरकारी तंत्र की इस खामी का पता चलता है कि भारत में सरकारी दफ़्तरों में बहुत ज़्यादा रिश्वतखोरी चलती है। बिना रिश्वत दिए कोई भी काम कराना लगभग नामुमकिन था। इसी व्यवस्था के कारण सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं का लाभ गरीबों को नहीं मिलता और वे भूखे मरते हैं।

6. भोलाराम के जीव की पेंशन मंजूर नहीं हुई थी जिसके लिए उसने कई दरख्वास्तें दी थीं। मरने के बाद भी उसका मन पेंशन की फाइलों में ही लगा रहा। अत: दरख्वास्तों में अटके रहने के कारण उसने स्वर्ग जाने से इनकार कर दिया।

   इससे भोलाराम की इस मानसिकता का पता चलता है कि सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं का लाभ भोलाराम जैसे गरीब व्यक्ति को न मिल सका और इस कारण वह सरकारी दफ़्तरों के चक्कर लगाता हुआ ही मर गया। मृत्यु को प्राप्त होने के पश्चात भी उसका जीव अपने अधिकार को पाने में ही उलझा रहा।।

ग.
1. धर्मराज ने यमदूत से कहा।
2. चित्रगुप्त ने नारद से कहा।
3. साहब ने नारद से कहा।
4. भोलाराम के जीव ने नारद से कहा।

Page-91

घ.
1. माँ-बेटों के सम्मिलित क्रंदन से नारद भोलाराम का मकान पहचान गए।
2. नारद ने भोलाराम की पत्नी से पूछा कि माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी?
3. भोलाराम की पत्नी ने नारद को बताया कि उन्हें गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गए पेंशन पर बैठे पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पंद्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेचकर हम खा गए, फिर बरतन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फ़ाके होने लगे थे। चिंता में घुलते-घुलते और भूख से मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

ङ.
1. नरक में पिछले सालों में गुणी कारीगर आ गए हैं, से आशय है कि हमारे देश में ठेकेदारों, इंजीनियरों तथा ओवरसीयरों ने मिलकर देश के लिए बनने वाली सड़कों, इमारतों तथा दूसरे निर्माण कार्यों में बहुत घोटाले किए हैं। रिश्वत खाकर घटिया दर्ज़े का कार्य किया जाता है जिससे कई दुर्घटनाएँ हुई हैं तथा अनगिनत लोगों की जान गई है। इनके बुरे कर्मों के कारण मरने के बाद धर्मराज ने इन्हें नरक में भेज दिया। इस प्रकार इमारत के ठेकेदारों, इंजीनियरों तथा ओवरसीयरों का नरक जाना अप्रत्यक्ष रूप से भारत में फैले भ्रष्टाचार पर

करारा व्यंग्य है।

2. दरख्वास्तें पेपर-वेट से नहीं दबतीं अर्थात सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार इस कदर व्याप्त है कि बिना रिश्वत दिए काम नहीं चलता। बिना रिश्वत के कोई भी भला मनुष्य सरकारी कार्यालय में अपना काम नहीं करा सकता। भले ही मनुष्य के प्राणों का सवाल ही क्यों न हो। भ्रष्टाचार के दानव ने देश के विकास और देशवासियों के चरित्र, दोनों को निगल लिया है।

3. यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है, से आशय यह है कि मंदिर में जब भक्त जाता है, तो वहाँ पूजा-पाठ करता है। भगवान को भेंट चढ़ाता है। अपनी इच्छा पूरी कराने के लिए मन्नत माँगता है। वर्तमान समय में सरकारी कार्यालयों का भी यही हाल है। यदि हमें अपना काम कराना हो तो खुशामद करनी पड़ती है, रिश्वत देनी पड़ती है, तब जाकर कहीं सरकारी कर्मचारी काम करते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. पाँच तरंग चंगुल वहाँ
व्यंग्य माँ ऊँघ संगीत
हाँ घंटी

ख. 2. स् + व् + अ + र् + ग् + अ
3. य् + आ + त् + र् + आ
4. प् + ऋ + थ् + व् + ई
5. व् + अ + ज् + अ + न् + अ

Page-92

ग. 1. सरिस धरम नहिं भाई
2. दाँतों तले उँगली दबा कर
3. नौ-दो ग्यारह हो गया।
4. गागर में सागर
5. के दाँत खाने के और, दिखाने के और
6. आँखों में धूल झोंककर
7. होश उड़ गए

घ.

पराजय	अपमान
अवगुण	आजीवन
उपवन	नाराज
प्रबल	विशेष

(कौशल-परीक्षण)

1. प्रत्येक व्यक्ति विलासितापूर्ण जीवन जीना चाहता है। इस प्रकार की इच्छाओं के कारण वह गलत कार्यों में लिप्त होने से चूकता नहीं है। इन इच्छाओं को वश में करने के लिए हमें सर्वप्रथम स्वयं के साथ ईमानदार होना पड़ेगा। हमें अपनी शक्तियों तथा कमज़ोरियों का सटीक अनुमान लगाना चाहिए। जितना है उतने में ही संतुष्ट रहने का भाव हमारे भीतर होना चाहिए। हमें अपने वर्तमान को सँवारना चाहिए, न कि भविष्य की चिंता के कारण विलासितापूर्ण जीवन जीने हेतु गलत मार्ग अपनाना चाहिए। यदि हम अपने भीतर की योग्यता को पहचान लें तो हम अपने सभी कार्यों को उचित प्रकार से पूर्ण कर सकते हैं। इसलिए हमें धैर्य के साथ प्रत्येक कार्य को पूर्ण करना चाहिए।

2. वर्तमान समय में भारत में भ्रष्टाचार पूर्णतः फैल चुका है। लगभग सभी प्रकार की आई.टी. कंपनियाँ, बड़े कार्यालय अच्छी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद भी आज भारत पूरे तरीके से विकसित होने की दौड़ में बहुत पीछे है जिसका सबसे बड़ा कारण भ्रष्टाचार ही है। भ्रष्टाचार मुक्त भारत का स्वप्न साकार करने के लिए हम निम्नलिखित प्रयास कर सकते हैं-

- भ्रष्टाचार इसलिए होता है क्योंकि हम उसे होने दे रहे हैं इसलिए हमें भ्रष्टाचार का विरोध करना चाहिए और लोगों में इसके विषय में जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए।
- भ्रष्टाचार को रोकने का सबसे आसान तरीका है कि भ्रष्टाचारी को कड़ी-से-कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए क्योंकि यह भी आतंकवाद एवं देशद्रोह के समान ही है जिससे देश की आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
- सभी कार्यालयों में कैमरे लगे होने चाहिए।
- सरकार द्वारा ऐसा कदम उठाया जाने चाहिए कि कर्मचारियों का वेतन सीधा उनके बैंक खाते में ही जाए।
- दफ़्तरों के बड़े अधिकारियों को प्राप्त विशेषाधिकार हटा दिए जाने चाहिए।
- भ्रष्ट तथा अपराधी तत्वों के चुनाव लड़ने पर पाबंदी होनी चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।
5. **भ्रष्टाचार: समस्या एवं समाधान**

   भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है–'बिगड़ा हुआ आचरण' अर्थात वह आचरण या कृत्य जो अनैतिक अथवा अनुचित है। वर्तमान में भ्रष्टाचार की जड़ें अत्यधिक गहरी होती जा रही हैं। भ्रष्टाचार भी अनेक कारणों से होता है। इसका सबसे प्रमुख कारण मनुष्य में असंतोष की प्रवृत्ति है। वह अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं हो पाता है। वह सदैव अधिक पाने की लालसा, इच्छाओं तथा क्षमताओं में संतुलन नहीं रख पाता। इस कारण व्यक्ति अनैतिक कार्यों में लिप्त हो जाता है और इसी के चलते भ्रष्टाचार उत्पन्न होता है। प्रशासनिक स्तर पर यह आवश्यक है कि भ्रष्टाचार के आरोपी व्यक्तियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए। इसके लिए प्रशासन को कठोर व निष्पक्ष होना पड़ेगा। सामाजिक स्तर पर यह आवश्यक है कि हम ऐसे तत्वों को बढ़ावा न दें जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं या उसमें लिप्त हैं; ऐसे व्यक्तियों को मुख्यधारा से अलग कर देना चाहिए। व्यक्तिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि हम यह समझें कि समाज से भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकने का दायित्व हम पर ही है। तब निस्संदेह ही हम भविष्य में भ्रष्टाचार रहित समाज की कल्पना कर सकते हैं। भ्रष्टाचार के पूर्णत: उन्मूलन से पूर्व हमें इस पर विचार करना होगा कि वे क्या कारण हैं जिनके फलस्वरूप समाज के धनाढ्य एवं सुशिक्षित उच्च पदासीन व्यक्ति अधिक संख्या में भ्रष्टाचार में लिप्त हैं।

11 छोटा जादूगर

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-100 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. लेखक ने छोटे जादूगर को बारह टिकट खरीदकर दिए। उसके साथ कार्निवल में निशाना लगाने वाला खेल खेला, शरबत पिया और बाद में अपने परिवार के साथ खिलौने वाला देखा।

2. छोटे जादूगर ने अपने परिवार के बारे में लेखक को बताया कि उसके पिता जेल में और माँ बीमार है। मैं तमाशा दिखाकर माँ को पैसे दूँगा, उनकी दवा खरीदूँगा और अपना पेट भरूँगा।

3. जब लेखक ने बारह टिकट खरीदकर निशाना लगाने के लिए उस जगह पर दिया जहाँ खिलौने को गेंद से गिराया जाता था तब उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया। उस समय लेखक को लगा कि यह तो पक्का निशानेबाज़ था।

4. लेखक ने देखा कि झोंपड़े में एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी। छोटा जादूगर अपनी माँ के ऊपर कंबल डालकर, उसके शरीर से चिपकते हुए 'माँ! माँ!' कह रहा था। उस दृश्य को देखकर लेखक की आँखों से आँसू निकल पड़े। लेखक जब दूसरी बार छोटे जादूगर के साथ उसके झोंपड़े में पहुँचता है, तो जादूगर दौड़कर झोंपड़े में ''माँ–माँ'' पुकारते हुए घुसता है। उस समय स्त्री के मुँह से, 'बे'... निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए और जादूगर उससे लिपटकर रोने लगा।

5. सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थी, बंदर घुड़कने लगा।

गुड्डे को वर बनाकर गुड़िया से ब्याह दिया गया। जिसे देख सब हँसते–हँसते लोट–पोट हो रहे थे।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. अ 2. अ
3. अ 4. ब

Page-100-101

ख. 1. छोटा जादूगर कार्निवल के मैदान में तरह–तरह के खेल देखने गया था; जैसे– चूड़ी कैसे फेंकते हैं, खिलौनों पर निशाना कैसे लगाते हैं, तीर से नंबर कैसे छेदते हैं, आदि।

2. छोटा जादूगर खेल तमाशा अपनी माँ की दवाइयों की ज़रूरतों को पूरा करने, और अपना पेट भरने के लिए दिखाता था।

3. लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसे छोटी–सी उम्र में ही अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ये सब काम करने पड़ते थे।

4. खेल समाप्त होने के बाद जब लेखक ने कहा– आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं? तब लड़के ने कहा– माँ बीमार है। आज तुरंत चले आने को कहा है और बोली मेरा समय आ गया है।

Page-101

5. छोटा जादूगर बहुत ही निडर और स्वाभिमानी था। वह पक्का निशानेबाज़ था। वह बहुत मेहनती लड़का था। आर्थिक और सामाजिक विवशताओं के बाद भी वह देशभक्ति की भावना अपने मन में लेकर चलता था और उसे अपने पिता पर गर्व था जो देश के लिए जेल में बंद थे। वह अपने पिता की अनुपस्थिति में माँ की देख–भाल करता था।

6. प्रस्तुत कहानी से हमें मातृ–प्रेम, देशभक्ति की भावना, कर्तव्य–निष्ठा, आत्मनिर्भरता, बहादुर और मेहनती बनने की सीख मिलती है।

ग. 1. श्रीमती जी ने उसे एक रुपया दिया था इसलिए वह उछल उठा।

2. छोटे जादूगर ने खेल को जीविका इसलिए कहा क्योंकि खेल दिखाना ही उसके जीवन यापन का साधन था।

3. छोटा जादूगर एक रुपये से पकौड़ी और सूती कंबल खरीदना चाहता था।

4. लेखक अपने-आप पर इसलिए क्रुद्ध हुआ क्योंकि उसे गलती का अहसास हुआ कि वह स्वार्थी है, जो एक रुपया पाने पर ईर्ष्या करने लगा था।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. मृत्यु 2. पराया
3. दिन 4. दुर्गंध
5. अस्त 6. दुख

ख. 1. विश्व, दुनिया
2. चंद्रमा, राकेश
3. बरसात, बारिश
4. वायु, पवन
5. पुष्प, सुमन
6. नेत्र, चक्षु

ग. 1. गुणवाचक विशेषण
2. सार्वनामिक विशेषण
3. संख्यावाचक विशेषण
4. संख्यावाचक विशेषण

Page-102

घ. 1. आप भी कमाल करते हैं।
2. तुम्हें मात्र पाँच मिनट रुकना है।
3. सीमा ने आने की खबर तक नहीं दी।
4. यह काम सुभागी ही कर सकती है।

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. छोटा जादूगर की कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि जैसे भी हालात हों, हमें अपने लक्ष्य से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. **बालश्रम का कारण आर्थिक मजबूरी है–**

बालश्रम एक ऐसी विकट समस्या है जिसके कारण आज विश्व में कई देश विकसित नहीं हो पा रहे हैं। बच्चे ही भविष्य को बेहतर बनाएँगे तथा नई ऊँचाइयों पर लेकर जाएँगे। भारतीय कानून के अनुसार 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों से किसी भी कारखाने, ऑफ़िस या होटल में काम करवाना कानूनन अपराध है। लेकिन भारत में आज भी ज़्यादातर जगहों में बाल मज़दूरी कराई जा रही है।

बाल मजदूरी के कारण–

- गरीबी के कारण माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ा नहीं पाते हैं तथा उनसे बाल मज़दूरी करवाते हैं।
- गरीबी तथा शिक्षा के आभाव के कारण इन लोगों को विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी नहीं होती जिससे इनका आसानी से शोषण किया जाता है।
- नशे की आदत तथा लापरवाही की वजह से कुछ माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय परिवार की आमदनी बढ़ाने के लालच में बाल मजदूरी करने भेज देते हैं।
- बालश्रम को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों का सही ढंग से पालन नहीं होने से भी बाल मज़दूरी बढ़ रही है।
- सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़ापन भी बालश्रम का मुख्य कारण है।
- कई परिवारों में नशे, बीमारी या अपंगता के कारण कोई कमाने वाला नहीं होता है, वहाँ परिवार के भरण-पोषण का एकमात्र आधार ही बाल मज़दूरी होता है।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

12 ककड़ी की कीमत

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-108 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. लेखक कहते हैं कि दिल्ली का सब रंग-ढंग ही बिगड़ गया है। बाज़ार में, मकानों में, चाल-ढाल में, सड़कों में, सबमें विलायतीपन आ गया है। जब से दिल्ली भारत की राजधानी बनी है और नई दिल्ली की चकाचौंध को मात करने वाली विचित्र नगरी बसी है, दिल्ली पंजाब से अलग सूबा होने के बावजूद भी इसमें पंजाबियत भर गई।

2. पुराने समय में दिल्ली के चाँदनी चौक में अगल-बगल चलनेवालों के लिए पटरियाँ बनी थीं, और सड़कें कंकड़ की थी। उनमें इक्के सरपट दौड़ा करते थे, बीचोंबीच चमकती सड़कें, ज्येष्ठ-वैशाख की दोपहरी में शीतल वायु के झोंके आया करते थे। आजकल यह सब देखने को कम मिलता है।

3. पुराने समय में सब्ज़ी-तरकारियों में जो पहले चलती थीं, वही दिल्ली के रईस खाते थे। भिंडी और करेले जब तक रुपए सेर बिकते थे, कच्चे आम की कैरियाँ जब तक बारह आने सेर बिकती थीं, तभी तक वे दिल्ली-वालों के खाने की चीज़ समझी जाती थीं। सस्ती होने पर उन्हें कोई नहीं पूछता था। बेर के मौसम में लोग बेरों को चाकू से छीलकर उन पर चाँदी का वर्क लपेटकर खाते थे। नफासत और नज़ाकत हर एक बात में थी। तब लोग दिखावटी प्रतिष्ठा के लिए जान भी दे देते थे।

4. ककड़ी बेचने वाला यह आवाज़ लगा रहा था–'नाजुक ये ककड़ियाँ ले लो...'लैला की उँगलियाँ ले लो'....'मजनू की पसलियाँ ले लो' '...नाजुक ये ककड़ियाँ ले लो।'

5. लाला जगत नारायण ने अपनी रईसी और प्रतिष्ठा दिखाने के लिए ककड़ियाँ शिवप्रसाद जी के यहाँ भिजवाईं होंगी।

Page-109 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. ब
3. अ 4. स
5. स

ख. 1. युवक ने, कुँजड़े से
2. बूढ़े ने, युवक से
3. लाला जगत नारायण जी ने, बूढ़े से
4. लाला जगत नारायण जी ने, रामदीन से

ग. 1 सैकड़ों कंठों से नारा बुलंद इसलिए होने लगा था क्योंकि बूढ़े आदमी को अपनी जीत पर गर्व होने लगा था और वह नौकर दिल्ली की शान बन चुका था। इसलिए सैकड़ों आदमी उसकी हाँ में हाँ मिलाकर उसे प्रोत्साहित कर रहे थे।

2. बाज़ार में घटित घटना सुनने के पश्चात लाला जगत नारायण ने अपने गले से सोने का तोड़ा उतारकर बूढ़े के गले में डाल दिया और उसके बदन को दुशाले से लपेटकर स्वयं भी उससे लिपट गए। उनकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली। उन्होंने गद्गद कंठ से कहा "शाबाश

मेरे प्यारे रामदीन, तुमने बाज़ार में मेरी प्रतिष्ठा बचा ली।" इसके बाद उन्होंने चाँदी की तश्तरी में ककड़ियों को उन्हीं गुलाब के फूलों में रखकर ऊपर कम ख्वाबा का रूमाल ढककर कहा– "जाओ, लाला शिवप्रसाद जी से मेरा जय गोपाल कहना और कहना कि आपके सेवक ने यह प्रेम की सौगात भेजी है और हाथ जोड़कर अर्ज़ है कि स्वीकार करके इज़्ज़त अफ़ज़ाई करें।"

3. लाला जगत नारायण ने इसे अपनी प्रतिष्ठा से इसलिए जोड़ा क्योंकि उनकी हर जगह शान और आदर सम्मान था।
4. लाला शिवप्रसाद ने आत्महत्या इसलिए की क्योंकि उनकी बाज़ार में इज़्ज़त की किरकिरी हो गई थी और वह दुनिया में मुँह नहीं दिखा सकते थे।
5. प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य यह है कि रईस समाज में 'दिखावा' प्रमुख है। झूठी शान–शौकत का घमंड रखना और दूसरों की अपेक्षा स्वयं को बड़ा रईस सिद्ध करने का कोई मौका न छोड़ना ही 'प्रतिष्ठा' माना जाता है। इसके लिए रईस समाज के लोग अपनी जान भी दे सकते हैं।

Page-110

घ.
1. यहाँ पर वसंत मौसम का ज़िक्र हुआ है।
2. बाज़ार में नरम–नरम पतली ककड़ियाँ आने लगी थीं।
3. कुंजड़े के सिर पर नारंगी साफा बेपरवाही से बँधा था, आँखों में सूरमा और मुँह में पान की गिलौरियाँ थीं। कमर में चौखाने का तहमद और पैर में फूलदार जूते थे।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ–विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा–ज्ञान)

क.
1. आजकल दिल्ली का सब रंग–ढंग ही बिगड़ गया है।
2. बंसती हवा मन को हरा कर देती है।
3. अगर मैं इस बार भी परीक्षा में पास नहीं हुआ तो मेरे दोस्तों के सामने मेरी इज़्ज़त की किरकिरी हो जाएगी।
4. लाला शिवप्रसाद का बाज़ार में बहुत बोलबाला था। लेकिन चोरी करने के इलज़ाम में वह दुनिया में मुँह नहीं दिखा पा रहे थे।

ख.
1. "अभी ककड़ियाँ कहाँ?"
2. "अठन्नी ले लो जी, ककड़ियाँ हमें दे दो।"
3. "सिर्फ़ दो ही रवे हैं?"
4. "सौदा हमसे हुआ है जी, ककड़ियाँ हम लेंगे।"
5. "वाह भाई महरा, क्यों न हो? आखिर तू है किस घराने का नौकर, जो इस समय दिल्ली की नाक है। शाबाश!"

Page-110-111

ग.	1. संयुक्त	2. मिश्रित		
	3. सरल	4. मिश्रित		
	5. संयुक्त	6. सरल		
घ.	1. सकर्मक	2. अकर्मक		
	3. अकर्मक	4. सकर्मक		
	5. अकर्मक			
ङ.	1. हिनहिनाना	2. गड़बड़ाना		
	3. खटखटाना	4. बतियाना		

5. भिनभिनाना 6. शर्माना

7. सठियाना 8. बड़बड़ाना

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. **दिखावे की संस्कृति**

आज की दिखावे की संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को पूरी तरह प्रभावित कर रही है। आजकल दिखावे की संस्कृति के प्रचार-प्रसार के कारण हमारी अपनी सांस्कृतिक पहचान, परंपराएँ, आस्थाएँ घटती जा रही हैं। हमारा सामाजिक संबंध संकुचित होने लगा है। मन में अशांति एवं आक्रोश बढ़ रहे हैं। आज हर तंत्र पर विज्ञापन हावी है, परिणामतः हम वही खाते-पीते और पहनते-ओढ़ते हैं जो आज के विज्ञापन हमें कहते हैं। दिखावे की संस्कृति के कारण हम धीरे-धीरे दिखावे की संस्कृति के दास बनते जा रहे हैं। सारी मर्यादाएँ और नैतिकताएँ समाप्त होती जा रही हैं तथा मनुष्य स्वार्थ-केंद्रित होता जा रहा है। विकास का लक्ष्य हमसे दूर होता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप हम लक्ष्यहीन हो रहे हैं।

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

सुझावित आवधिक प्रश्न-पत्र-2

खंड 'अ'

Page-114

क. 1. अंग्रेज़ सरकार ने जनता को कुचलने के लिए दमनकारी बिल केंद्रीय असेंबली में पेश किया।

2. दमनकारी बिल पेश करने का यह परिणाम निकला कि देश ने एक स्वर में उसका विरोध किया। असेंबली में बम फेंका गया।

3. असेंबली में बम भगतसिंह और उनके साथी बटुकेश्वर दत्त ने फेंका।

4. भगत सिंह की गिरफ़्तारी के बाद दल के पुनर्गठन और उसे आगे बढ़ाने की ज़िम्मेदारी अकेले आज़ाद के कंधों पर आ गई।

5. अंग्रेज़ सिपाहियों से घिर जाने पर आज़ाद ने स्वयं को गोली मार ली और देश की खातिर शहीद हो गए।

खंड 'ब'

ख. 1. छत के ऊपर बच्चे खड़े हैं।

2. मेज़ के नीचे बॉल है।

3. रेखा घर के बाहर खेल रही है।

ग. 1. मध्यम पुरुष सर्वनाम

2. अन्यपुरुष सर्वनाम

3. निजवाचक सर्वनाम

घ. हस्त, ग्राम, मानुस

ङ. अनुप्रास अलंकार-पचिहारे तू पुनि पार न पावैं।

च. 1. सकर्मक 2. सकर्मक

3. अकर्मक

छ. 1. सरल वाक्य 2. मिश्रित वाक्य

3. संयुक्त वाक्य

ज. व् + ई + ण् + आ

द् + अ + फ् + त् + अ + र् + अ

Page-115

झ. गौ, धेनु,

गाय– गौ, धेनु

पक्षी– खग. द्विज

खंड 'स'

ञ. 1. साहब ने कहा– "मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका भी वजन भोलेराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है।"

2. वज़न का अर्थ यहाँ पर नोटों के भार या रिश्वत से है।

3. पवित्र 'वीणा' को कहा गया है।

4. साहब की लड़की गाना–बजाना सीखती थी जिससे उसकी शादी हो जाए।

5. वीणा मेज़ पर रखकर नारद ने कहा अब भोलाराम का पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।

ट. इन सवैयों में रसखान ने बाल कृष्ण के बाल रूप का वर्णन किया है। वे लिखते हैं– "कृष्ण के सांवले शरीर पर धूल उसी प्रकार शोभित हो रही है, जैसे सिर पर चोटी। वे आँगन में खेल रहे हैं और खेलते समय उसके पैंरो की पायल बज रही है। उन्होनें पीले रंग की लँगोटी पहने हुई है।" रसखान जी कृष्ण की ऐसी छवि को देखकर उन पर न्योछावर है। कृष्ण की लीला के समक्ष कामदेव की करोड़ निधि तुच्छ है। रसखान जी कौए के भाग्य की सराहना करते हुए कहते हैं कि कौआ बड़ा ही भाग्यशाली है जो श्रीकृष्ण के हाथ से माखन–रोटी लेकर उड़ गया। अर्थात् इस पक्षी ने श्रीकृष्ण का दर्शन कर लिया।

ठ. 1. भोलाराम की पत्नी ने नारद जी को अपने पति की मृत्यु के बारे में बताया कि पाँच सालों से पेंशन नहीं मिली थी। वे हर दस–पंद्रह दिन में एक दरख़्वास्त देते थे, पर वहाँ से कोई जवाब नहीं आता था, और आता तो यही लिखा होता कि तुम्हारी पेंशन के मामले में विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सारे गहने बिक गए हैं। अब मेरे पास कुछ नहीं बचा है। इसी चिंता में घुलते–घुलते और भूख से मरते–मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।

2. छोटा जादूगर खेल तमाशा अपनी माँ की दवाइयों की जरूरतों को पूरी करने तथा अपना पेट भरने के लिए दिखाता था।

3. लाला शिवप्रसाद ने आत्महत्या इसलिए की क्योंकि उनकी बाज़ार में इज्ज़त की किरकिरी हो गई थी। और वह दुनिया में मुँह नहीं दिखा सकते थे।

ड़. 1. स 2. अ

3. द

ढ़ विद्यार्थी स्वयं करें।

13

इकाई–IV (प्रखर)

भारत माता

(अभ्यास–उत्तर)

काव्य–बोध

Page-118-119 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. यह कविता देश प्रेम, एकता और भाईचारा अथवा सर्व कल्याण की भावना के बारे में है।

2. इस कविता के रचयिता मैथिलीशरण गुप्त हैं।

3. सबको मित्र बनाने के लिए हमें सबको एक साथ मिलाकर चलना होगा। जाति–धर्म या संप्रदाय से मतभेद मिटाना होगा, सभी धर्मों

का आदर करना होगा। अपसी रंजिशों को दूर करना होगा तथा सभी में देशप्रेम के भावों का संचार करना होगा। हमें ऐसा वातावरण बनाना होगा जिससे सभी जन अपने मन की बात यानी प्रसन्नता और दुख को व्यक्त कर सकें।

4. प्रस्तुत कविता हमें यह संदेश देती है कि अगर हम साथ मिलकर चलेंगे तो हर काम को आसान बना सकते हैं। विश्व में राष्ट्र का गौरव बढ़ा सकते हैं। यदि हम सभी राष्ट्र का गौरवगान करते हैं, तो ऐसा करने से ही हमारे भीतर देशप्रेम के भावों का संचार होता है, जिससे हमारी भावना राष्ट्रीय हितों की ओर प्रेरित होता है। जिस देश में राष्ट्रीय हित सर्वोपरि हो जाता है, वहाँ पर तुच्छ स्वार्थों के लिए कोई स्थान नहीं रहता।।

Page-119

(लिखित अभिव्यक्ति)

क.

1.	✓	2.	✓
3.	✓	4.	✓
5.	✗	6.	✓

ख. 1. कवि ने भारत माता का मंदिर देश को कहा है क्योंकि कवि सबका कल्याण चाहता है। वह किसी जाति-धर्म में भेद नहीं करता। वह चाहता है कि सभी देश के प्रति प्रेम की भावना रखें और हमेशा साथ मिलकर रहें।

2. कवि भारत की निम्न विशेषताओं से प्रभावित है–

- भारत में समानता की भावना मौजूद है।
- यहाँ जाति या धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होता।
- यहाँ प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान तथा आदर होता है।
- सभी धर्मों की उपासना इस देश में की जाती है।

3. चरित्र-निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि हमें एक-दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक रहना चाहिए, न कि शत्रुता का भाव रखना चाहिए। हमें अपने हृदय में सभी धर्मों के लोगों के लिए अच्छे भाव रखने चाहिए। एक-दूसरे के साथ हमें अपने सुख तथा दुख बाँटने चाहिए। हमें देश के कल्याण का भाव सदैव अपने भीतर रखना चाहिए।

4. कवि सभी भारतवासियों को सुख-दुख बाँटने का परामर्श इसलिए देते हैं क्योंकि अगर हम सभी के साथ अपने सुख-दुख बाँटेंगे तो हम हर कठिन कार्य को आसान बना सकते हैं। हमारे देश में जाति व धर्म के बारे में कोई भेद-भाव नहीं होता। इसलिए एक साथ कार्य करने से ही हर काम सरल बनता है।

ग. 1. कवि कहना चाहता है कि हमारा देश तरह-तरह की संस्कृतियों से प्रभावित है। यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार के लोग व धर्म आदि का उल्लेख है। हमारे देश में राम, रहीम, बुद्ध व ईसा के द्वारा किए गए प्रयास इस संस्कृति की महत्वपूर्ण धरोहर बन गए हैं। यह देश लोगों के गुण एवं प्रतिष्ठा से भरपूर है।

2. देश के सभी व्यक्तियों को भारत के कल्याण के विषय में सोचना चाहिए तथा उसके उद्धार का भाव अपने भीतर रखना चाहिए क्योंकि देश का हित करके ही हम अपना हित भी कर सकेंगे। हम तभी प्रगति कर सकते हैं जब हमारा देश प्रगति करे।

3. कवि कहता है कि हमारे भारत में जाति या धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं होता। क्योंकि यहाँ पर मनुष्यों के अनेक मार्ग बनाए गए

हैं। यहाँ पर सभी धर्मों का आदर व सम्मान किया जाता है। सभी धर्मों से प्रेम करना व उनके धर्मों के प्रति भक्ति भाव रखना, यही हमारे देश में बताया गया है।

Page-119-120

घ. 1. द 2. अ
3. स 4. ब

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. अपमान 2. घृणा
3. निरादर 4. विषम
5. दुर्लभ 6. अपवित्र
7. शत्रु 8. पराजय
9. शोक 10. बुरा

ख. मंदिर, यहाँ, संस्कृति, संप्रदान, बाँट, रेखाएँ

ग. 1. मैया, जननी
2. रिपु, दुश्मन
3. देवगृह, देवालय
4. सखा, सहचर

घ. 1. रेखाएँ 2. माताएँ
3. जातियाँ 4. सपने
5. संस्कृतियाँ 6. सीढ़ियाँ
7. कविताएँ 8. मालाएँ
9. चिड़ियाँ 10. लड़ाइयाँ

Page-121

ङ. ध्यान-ज्ञान, पवित्र-मित्र, चित्र-चरित्र, विषाद-प्रसाद व्यवधान- सम्मान, जनाद -प्रसाद

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. हमें कविता के माध्यम से यह पता चला है कि हमें अपने देश के प्रति प्रेम व प्रतिष्ठा का भाव रखना चाहिए। भारत में अनेक प्रकार की संस्कृतियाँ व जातियाँ हैं जिन्हें अगर हम साथ लेकर चलें तो हम काम को आसान बना सकते हैं व निष्ठा का भाव रख सकते हैं। अगर हमारे मन में एकता व भाईचारे की भावना होगी तो हम सभी देश की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।
5. विद्यार्थी स्वयं करें।

14 नींव की ईंट

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-126 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. किसी इमारत की मज़बूती उसकी नींव पर निर्भर करती है; जैसे— नींव ज़मीन के कितने हाथ नीचे है? नींव के निर्माण में किन ईंटों का प्रयोग किया गया है? यदि ईंट पक्की है और उसकी गुणवत्ता उत्तम है तो उस पर बनने वाली इमारत भी मज़बूत और टिकाऊ होगी।

2. नींव की ईंट उन महान व्यक्तियों का प्रतीक है जिन्होंने देश के लिए बलिदान तो दिया किंतु ऐसे लोगों का नाम इतिहास में दर्ज़ न होने के कारण कोई उन्हें जानता नहीं है।

3. लेखक ने नींव की ईंट को धन्य इसलिए कहा है क्योंकि इसी ईंट के बल पर किसी इमारत की मज़बूती और पुखतेपन के कारण उसका होना अथवा न होना निर्भर करता है। सुंदर सृष्टि हमेशा से ही बलिदान खोजती आई है। अत: ईंट भी नीवं की खातिर अपने अस्तित्व को मिटा देती है।

4. लोगों का ध्यान सत्य की ओर इसलिए नहीं जाता क्योंकि सत्य कठोर होता है, कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्मा करते हैं, हम कठोरता और भद्धेपन से मुख मोड़ने के कारण सत्य से भी भागने लग जाते हैं।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ✗ 2. ✓
3. ✓ 4. ✓
5. ✗

ख. 1. द 2. द

ग. 1. कठोरता और भद्दापन साथ-साथ जन्म लेते हैं और जीते हैं। हम कठोरता से भागते हैं, भद्देपन से मुख मोड़ते हैं। सत्य भी कठोर होता है जिससे हम निरंतर भागते रहते हैं। सच्चाई भलाई ढूंढती है और हम इस सच्चाई का सामाना करना नहीं चाहते हैं। हम कँगूरा की भाँति बने रहने चाहते हैं ताकि कि हमें मेहनत नहीं करनी पड़े और हम कामयाबी के ऊँचे शिखर पद पर आसीन होकर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकते है।

2. लेखक कंगूरे के गीत गाने वालों को नींव के गीत गाने की सीख इसलिए देते हैं क्योंकि नींव पर ही इमारत का होना या न होना निर्भर करता है। नींव की ईंट को हिलाते ही कंगूरा ज़मीन पर आ गिरेगा और उसका अस्तित्व मिट जाएगा।

3. समाज के निर्माण के लिए हमें ऐसे नौजवानों की आवश्यकता है जो नींव की ईंट बन सकें। ऐसे नौजवान जो सात लाख गाँवों, हजारों शहरों और कारखानों का नव-निर्माण कर सकें तथा इस कार्य में स्वयं को चुपचाप खपा दें। ये निर्माण सिर्फ़ नवयुवक ही कर सकते हैं।

4. 'नींव की ईंट' निबंध में रामवृक्ष बेनीपुरी जहाँ एक तरफ स्वाधीनता संग्राम में बलिदान होने वाले देशभक्तों का प्रशस्ति गान करते हैं, वहीं स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात पद और प्रतिष्ठा के पीछे भागने वाले लोगों तथा नेताओं की निंदा भी करते हैं। लेखक नवयुवकों को नींव की ईंट बनने की चुनौती देते हैं और उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे नवनिर्माण के कार्य से देश का कल्याण करें।

Page-127

घ. 1. देश के कल्याण हेतु कई लोगों ने बलिदान दिया फिर वह बलिदान निम्न वर्गीय व्यक्तियों का रहा हो या ऐसे शहीदों का जो इतिहास में कहीं दिखाई नहीं पड़ते। उन्हीं के कारण देश का उद्धार हो सका। जिस प्रकार नींव की ईंट इमारत मजबूत बनाने में सहायक होती है उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के बलिदान से समाज समृद्ध हो सका।

2. देश को स्वाधीन करने में कई लोगों की जानें गईं, किंतु उन्होंने यह कार्य चुपचाप रहकर किया। उनका यह बलिदान कहीं दिखाई नहीं पड़ता। न ही हम उन सभी लोगों के बारे में जानते हैं जो सिर पर कफ़न लपेटे

देश को आज़ाद कराते हुए काल के गाल में चले गए। ऐसे ही व्यक्तियों की आवश्यकता आज भी समाज को सुंदर बनाने हेतु बनी हुई है।

3. आज का व्यक्ति केवल अपनी प्रसिद्धि चाहता है। वह अपना पद तथा प्रतिष्ठा बनाए रखना चाहता है। समाज के प्रति अपना कर्तव्य भूलकर व्यक्ति के भीतर स्व की भावना प्रबल होती जा रही है। इसलिए वह स्व-केंद्रित होता जा रहा है।

ङ. 1. हमने नए समाज की सृष्टि की ओर पहला कदम बढ़ाया है।

2. लेखक इस बात पर अफसोस प्रकट कर रहे हैं कि चारों ओर कंगूरा बनने की होड़ा-होड़ी मची है।

3. सात लाख गाँवों, हज़ारों शहरों तथा कारखानों का नव-निर्माण करना किसी शासक के लिए संभव नहीं है।

4. नव-निर्माण नौजवान कर सकते हैं।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. सत्यवादी 2. बहुमूल्य 3. स्वार्थी 4. ऐतिहासिक

ख. 2. आज़ादी 3. मजबूती 4. समृद्धि 5. शहादत 6. भद्दापन

Page-128

ग. 1. के, के लिए 2. से 3. पर, की 4. का

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. हम नींव की ईट बनना चाहेंगे जिससे हम समाज के कल्याण हेतु कार्य कर सकें। समाज के युवा समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं इसलिए हमें स्व-केंद्रित न होकर समाज के हित के लिए सोचना चाहिए जिससे हमारे देश की प्रगति हो क्योंकि इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से हम स्वयं की ही प्रगति कर सकेंगे।

3. विद्यार्थी स्वयं करें।

4. विद्यार्थी स्वयं करें।

15 तीन पौंड का कर

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-134 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. प्रस्तुत पाठ मोहनदास करमचंद गांधी की आत्मकथा पर आधारित है। इस आत्मकथा में उनहोंने गिरमिटिया समाज के लिए उनके अविस्मरणीय योदा का भावपूण किया गया है।

2. बालासुंदरम नौकर था। मालिक ने बालासुंदरम की खूब पिटाई की थी जिसके कारण उसके

आगे के दो दाँत टूट गए थे। इसलिए उसे मजिस्ट्रेट के पास ले जाया गया। वहाँ बालासुंदरम का शपथ-पत्र प्रस्तुत किया गया जिसे पढ़ने पर मजिस्ट्रेट ने मालिक पर क्रोधित होकर उसके नाम सम्मन जारी करने का आदेश दिया।

3. नेटाल के गोरे हिंदुस्तानी मज़दूरों को नेटाल इसलिए ले जाना चाहते थे क्योंकि वहाँ की ज़मीन पर ईख की फसल बहुत अच्छी हो सकती थी। वे जानते थे यदि मज़दूर नहीं मिले, तो न तो ईख उगेगी, न चीनी बनेगी। अपने व्यापारिक लाभ के लिए उन्होंने भारत सरकार से बातचीत करके हिंदुस्तानी मजदूरों को नेटाल ले जाने की अनुमति माँग ली।

4. सन् 1894 में नेटाल की सरकार ने एक कानून का मसविदा तैयार किया जिसमें गिरमिटिया हिंदुस्तानियों पर 25 पौंड अर्थात 375 रुपए का कर लगाया गया। इस मामले को स्थानीय कांग्रेस के समक्ष रखा गया। कांग्रेस ने इस मामले में आंदोलन करने का प्रस्ताव पास किया।

Page-134-135 (लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. ब 2. द

3. ब 4. अ

ख. 1. गिरमिटियों से जुड़े कानून के अंतर्गत यदि कोई साधारण नौकर नौकरी छोड़ता है तो मालिक उसके विरुद्ध दीवानी मुकदमा दायर कर सकता था। परंतु उसे फ़ौज़दारी में नहीं ले जा सकता था। वहीं यदि गिरमिटिया मालिक को छोड़ दे तो उसका गुनाह फ़ौज़दारी माना जाता था और दंड स्वरूप उसे कैद भुगतनि होती थी। गिरमिटिया गुलाम की ही भाँति मालिक की मिल्कियत माना जाता था।

2. गांधी जी के समक्ष बालासुंदरम को छुड़ाने के दो मार्ग थे–

- पहला यह कि कानूनी दृष्टि से उनका रक्षक कहलाने वाला गिरमिटिया के लिए नियुक्त अधिकारी उसका गिरमिट रद्द कर दे या किसी दूसरे के नाम लिखा दे।
- दूसरा – मालिक स्वयं उसे छोड़ने को तैयार हो जाए।

3. गांधी जी ने यह कथन इस संदर्भ में कहा कि जब भी गिरमिटिया हिंदुस्तानी किसी अंग्रेज़ के घर जाते थे तो उसके सम्मान में पगड़ी, टोपी या बँधा हुआ साफा उतार लेते थे। उनके अनुसार अंग्रेज़ दूसरों को अपमानित करके खुद को सम्मानित कैसे समझ सकते हैं?

4. नेटाल के गोरे हिंदुस्तानी श्रमिकों के विरोध में इसलिए हो गए थे क्योंकि वे उनकी प्रतिद्वंद्विता नहीं सह सकते थे। इस विरोध का प्रकटीकरण मताधिकारों को छीनने और गिरमिटियों पर कर लगाने के कानून के रूप में सामने आया।

5. गोरे व्यापारियों ने हिंदुस्तानी श्रमिकों को तंग करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए–

- इस दिशा में पहला सुझाव यह था कि गिरमिट पूर्ण होने के कुछ दिन पूर्व ही हिंदुस्तानी मज़दूरों को ज़बरदस्ती वापस भेजा जाए ताकि उनके इकरारनामे की अवधि हिंदुस्तान में पूरी हो परंतु इस सुझाव को भारत सरकार स्वीकार करने के पक्ष में नहीं थी।
- दूसरा सुझाव इस प्रकार था–
  - मजदूरी का इकरारनामा पूर्ण होते ही गिरमिटिया पुनः हिंदुस्तान लौट जाएँ।

- प्रत्येक दूसरे वर्ष नया गिरमिटिया लिखवाएँ और ऐसे में हर बार उनके वेतन को बढ़ाया जाए।
- यदि वह वापस नहीं लौटता, मज़दूरी का नया इकरारनामा भी नहीं लिखता तो हर साल वह 25 पौंड का कर दें। इससे अंग्रेज़ों की दमनकारी, अन्याय करने की और हिंसात्मक प्रवृत्ति जैसी मानसिकता का पता चलता है।

ग. 1. गांधीजी का मकसद बालासुंदरम को उसके मालिक के चंगुल से छुड़ाना था।

2. गिरमिटियों से जुड़े कानून की छानबीन करने पर पता चला कि यदि साधारण नौकर नौकरी छोड़ता है तो मालिक उसके विरुद्ध दीवानी मुकदमा दायर कर सकता था परंतु उसे फ़ौज़दारी में नहीं ले जा सकता था। यदि गिरमिटिया मालिक को छोड़ दे, तो उसका गुनाह फ़ौज़दारी माना जाता था और दंडस्वरूप उसे कैद भुगतनी होता थी। गिरमिटिया गुलाम की ही भाँति मालिक की मिल्कियत माना जाता था।

3. गांधीजी ने बालासुंदरम के मालिका को कहा कि मैं आपको सज़ा दिलवाना नहीं चाहता। जैसा कि आप जानते हैं, बालासुंदरम को बुरी तरह पीटा गया है। यदि आप इसका गिरमिट किसी अन्य के नाम लिखने के लिए रजामंद हो जाएँ तो मुझे संतुष्टि मिलेगी।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

Page-136

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. पाँच – विशेषण
2. मालिक – विशेष्य
3. ज़मींदार – विशेष्य
4. गरीब – विशेषण
5. हिंदुस्तानी – विशेष्य

ख. 1. मिश्रित वाक्य

2. मैंने उसके मालिक से मिलकर कहा, “मैं आपको सज़ा दिलवाना नहीं चाहता।”

3. उसकी मालकिन ने बुरी तरह मारा था।

4. **सजा** – सजाना – निशा ने अपने घर को फूलों की माला से सजाया।

सजा – दंड देना – नौकर ने अपने मालिक के घर में चोरी की इसलिए उसे सज़ा मिली।

5. मैंने बालासुंदरम को डॉक्टर के यहाँ भेजा क्योंकि मुझे उसके लिए चोट संबंधी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता थी।

6. आपा खोना – क्रोध में आना – मालिक ने आपा खोकर नौकर की पिटाई कर दी।

Page-137

7. अ. ऐसा प्रसंग खुद <u>ही</u> आया।

ब. कानून के बाहर <u>भी</u> उन्हें कई प्रकार से तंग किया जा रहा था।

(कौशल-परीक्षण)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. अगर हमारे सामने किसी के साथ अन्याय हो रहा हो तो हम उसको बचाने की पूरी

कोशिश करेंगे क्योंकि अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाना तथा हिंसा का सामना करना यह सब हमें इस पाठ से ज्ञात होता है। आत्मसम्मान और परिश्रम की महत्ता से ही इनसान अपने काम में आगे बढ़ता है। देश के प्रति जागरूक होना ही इनसान का धर्म है।

3. गांधी जी की आत्मकथा के इस अंश से हमने यह सीखा कि हमें सदैव परिश्रम करते रहना चाहिए, जागरूकता का भाव रखना चाहिए, अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।
2. विद्यार्थी स्वयं करें।
3. विद्यार्थी स्वयं करें।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।
5. मनुष्य के लिए पराधीनता अभिशाप के समान है। पराधीन व्यक्ति स्वप्न में भी सुख का अनुभव नहीं कर सकता। समस्त भोग-विलास व भौतिक सुखों के रहते हुए भी यदि वह स्वतंत्र नहीं है तो उसके लिए यह सब व्यर्थ है।

   पराधीन मनुष्य की वही स्थिति होती है जो किसी पिंजरे में बंद पक्षी की होती है जिसे खाने-पीने की समस्त सामग्री उपलब्ध है परंतु वह उड़ने के लिए स्वतंत्र नहीं है। हालांकि मनुष्य की यह विडंबना है कि वह स्वयं अपने ही कृत्यों के कारण पराधीनता के दुश्चक्र में फँस जाता है। पराधीनता के दर्द को भारत और भारतवासियों से अधिक कौन समझ सकता है, जिन्हें सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेज़ी सरकार के अधीन रहना पड़ा। स्वतंत्रता के महत्व को वह व्यक्ति पूर्ण रूप से समझ सकता है जो कभी पराधीन रहा है। हमारी स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इस स्वतंत्रता के लिए कितने वर्षों तक लोगों ने संघर्ष किया, कितने ही अमर शहीदों ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए हँसते-हँसते अपने प्राणों का बलिदान दे दिया।

   पराधीनता के स्वरूप को यदि हम देखें तो हम पाएँगे कि पराधीन व्यक्ति के लिए स्वेच्छा अर्थहीन हो जाती है। उसके सभी कार्य दूसरों के द्वारा संचालित होते हैं। पराधीन मनुष्य एक समय अंतराल के बाद इन्हीं परिस्थितियों में जीने और रहने का आदी हो जाता है। उसकी अपनी भावनाएँ दब जाती हैं। वह संवेदनारहित हो जाता है।

16 जीवन का यह पृष्ठ पलट, मन!

(अभ्यास-उत्तर)

पाठ-बोध

Page-140 (मौखिक अभिव्यक्ति)

1. इस कविता के कवि हरिवंश राय 'बच्चन' हैं।
2. यह कविता अतीत की स्मृतियों के भाव से संबंधित है।
3. कवि मन से अतीत की स्मृतियों का पृष्ठ पलटने के लिए कह रहा है। ताकि वर्तमान का आनंद लिया जा सके।
4. विद्यार्थी स्वयं करें।

(लिखित अभिव्यक्ति)

क. 1. स 2. द

3. स

Page-141

ख. 1. "मन की उत्सुकता दुर्दम है" अर्थात व्यक्ति का मन केवल अतीत की घटनाओं का ही स्मरण नहीं करता रहता अपितु मन में कई नवीन भाव निरंतर उत्पन्न होते हैं जो व्यक्ति को भविष्य के प्रति आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।

2. "जमा हुआ बनकर 'अक्षर'।" अर्थात व्यक्ति को अतीत में घटित ऐसी घटनाओं को भुला देना चाहिए जो उसके मानस-पटल पर अंकित होकर उसके जीवन पर हावी हो रही हैं तथा वर्तमान को प्रभावित कर रही हैं।

ग. 1. कविता में कवि मन को यह समझा रहा है कि अपने अतीत से बाहर निकलकर वर्तमान के पृष्ठ पलटो ताकि वर्तमान समय का आनंद लिया जा सके न कि अतीत की स्मृतियों को मन-मस्तिष्क पर हावी होने दो।

2. हाँ, हम इस कथन से सहमत हैं कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए अतीत को विस्मृत करना आवश्यक है क्योंकि यदि ऐसा न किया गया तो व्यक्ति दुखभरी घटनाओं में ही खोया रहेगा, जिसका असर उसके वर्तमान तथा भविष्य की घटनाओं पर पड़ेगा। इस कारण व्यक्ति न ही वर्तमान का आनंद ले सकेगा और न ही भविष्य का निर्धारण कर पाएगा।

3. कवि अपने मन से अतीत की स्मृतियों से बाहर निकलकर वर्तमान को जीने में परिवर्तन की माँग कर रहा है क्योंकि इस कारण वह ज़िंदगी के अनमोल पलों को जी सकेगा।

4. मन की चाहत है कि हम अपना जीवन खुशहाल बनाते हुए जिए किंतु अतीत में घटित घटनाएँ व्यक्ति के मानस-पटल पर बार-बार अंकित हो जाती हैं जिन्हें चाहकर भी वह रोक नहीं पाता। किंतु व्यक्ति को यह प्रयास करना चाहिए कि वह अपना समय वर्तमान तथा भविष्य सँवारने में लगाए।

(श्रुतलेख)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(पाठ-विस्तार)

विद्यार्थी स्वयं करें।

(भाषा-ज्ञान)

क. 1. क् + अ + ह् + आ + न् + ई

2. अ + क् + ष् + अ + र् + अ

3. म् + अ + न् + अ

4. ज् + य् + ओ + त् + इ

5. त् + अ + म् + अ

ख.

'क'	'ख'
अक्षर	वर्ण, आत्मा, ब्रह्मा, मोक्ष, अविनाशी
तम	अँधेरा, पाप, राहु, क्रोध
हार	पराजय, माला
मित्र	सूर्य, दोस्त

Page-142

ग. जीवन - मरण उपयोगी - अनुपयोगी

अधिक - न्यून एक - अनेक

आरंभ – अंत कोमल – कठोर

घ. कविता में पहले अक्षर का अर्थ 'शब्द' है तथा दूसरे अक्षर का अर्थ 'नष्ट न होने वाला' है।

(कौशल परीक्षण)

1. हाँ, मैं अकसर बीती घटनाएँ याद करके परेशान होता/होती हूँ। ऐसी घटनाओं से बचने के लिए हमें स्वयं को किसी-न-किसी कार्य में व्यस्त रखना पड़ेगा। यदि हम किसी कार्य में व्यस्त रहेंगे तो ऐसी घटनाओं को सोच नहीं सकेंगे जिनसे हमें दुख हो या हम परेशान हो जाएँ। योग या ध्यान करके भी हम इन परेशानियों से पार पा सकते हैं।

2. इस कविता से हमें मन को काबू करने की सीख मिलती है। मन चंचल है लेकिन इसे काबू किया जा सकता है। इसके लिए जरूरी है कि व्यक्ति के मन को वर्तमान पर केंद्रित होना चाहिए, न कि पुरानी बीती हुई घटनाओं को ही याद करते रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह स्मृतियों में ही न उलझा रहे अपितु अपनी ज़िंदगी के अनमोल क्षणों को जीना सीखे।

(विषय संवर्धन गतिविधियाँ)

1. विद्यार्थी स्वयं करें।

2. विद्यार्थी स्वयं करें।

3. **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**

मनुष्य के जीवन में पल-पल परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। जीवन में सफलता-असफलता, हानि-लाभ, जय-पराजय कुछ भी स्थिर नहीं रहता। एक पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए हमें जीवन में खट्ठे-मीठे अनुभवों से होकर गुज़रना पड़ता है। जहाँ अच्छा वक्त हमें खुशी देता है, वहीं बुरा वक्त हमें मज़बूत बनाता है। हम अपने जीवन में घटित घटनाओं पर नियंत्रण नहीं रख सकते, पर उनसे निपटने के लिए सकारात्मक सोच के साथ सही तरीका तो अपना ही सकते हैं। कई लोग अपनी पहली असफलता से इतना परेशान हो जाते हैं कि अपने लक्ष्य को ही छोड़ देते हैं। कभी-कभी तो वे अवसाद में चले जाते हैं। अब्राह्म लिंकन भी अपने जीवन में कई बार असफल हुए और अवसाद में भी गए, किंतु उनके साहस और सहनशीलता के गुणों ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ सफलता दिलाई।

ज़िंदगी हँसाती भी है और रुलाती भी है, जो हर हाल में आगे बढ़ने की चाह रखते हैं ज़िंदगी उन्हीं के आगे सिर झुकाती है। हम जो भी कार्य करना चाहते हैं, हमें तुरंत ही उसकी शुरुआत करनी चाहिए, न कि आने वाली बाधाओं को सोचकर बैठ जाना चाहिए। इनसान प्रत्येक कार्य कर सकता है अतः उसे बस अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर बढ़ते रहना चाहिए।

वार्षिक परीक्षा प्रश्न-पत्र

खंड 'अ'

Page-145

क. 1. आर्यभट्ट की देन गणित ज्योतिष विद्या है।

2. महाराष्ट्र के विद्वान डॉ॰ भाऊ दाजी द्वारा 1864 ई॰ में मलयालम लिपि में आर्यभटीय की ताड़-पत्र पोथियाँ खोजी और इसका विवरण प्रकाशित किया जिससे उनका परिचय मिला।

3. हमारे पहले कृत्रिम उपग्रह का नाम 'आर्यभट्ट था। उसे 19 अप्रैल, 1975 को अंतरिक्ष में छोड़ा गया।

4. लेखन ने आर्यभट्ट को प्राचीन विज्ञान का सबसे चमकीला सितारा कहा है।

Page-146

ख. 1. क्षमा देना उसे शोभा देता है जिसके पास गरल हो।

2. रघुपति श्रीराम थे। वे समुद्र से रास्ता माँग रहे थे क्योंकि वे समुद्र पार जाना चाहते थे।

3. रास्ता न मिलने पर श्रीराम ने घनुष से तीर सागर में चला दिया।

4. सागर रघुपति के चरणों में आ गिरा। उसने भय से अपनी गलती के लिए क्षमा माँगते तथा चरण पूजते हुए उनकी दासता स्वीकार कर ली।

5. अपनी गलती का सागर ने यह दंड भोगा कि उसे याहि-याहि करते हुए रघुपति के चरणों में झुकना पड़ा और उनकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी।

खंड 'ब'

ग. 1. अनुपयोगी 2. अंत

3. दुर्गंध

घ. 1. पाषाण, पाहन

2. कानन, जंगल

3. समीर, पवन

ड. 1. वर्ग, शिव, ब्रह्मा, मोक्ष, सत्य

2. अँधेरा, पाप, राहु, क्रोध

3. पराजय, माला

च. 1. कुआँ 2. रंग

3. चाँद

छ. 1. स्वादिष्ट 2. श्रद्धा

3. ब्रह्म मूहूर्त

ज. 1. जान लेने पर उतारू होना

2. गुस्सा होना

3. एकदम तैयार होना

Page-146-147

ट. 1. संप्रदान कारक

2. अ. भाववाचक संज्ञा

ब. जातिवाचक संज्ञा

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

4. तुझे, ठीक याद है बेटी!

5. वह दरिया के पेंदे में अंडरलाइन करें।

6. समुद्र के किनारे अपने भाइयों से जा मिलता।

खंड 'स'

ठ. 1. ईश्वर ने हमें दो हाथ काम करने के लिए दिए हैं।

2. ईश्वर का धन्यवादी इसलिए होना चाहिए क्योंकि उसने सिर्फ़ एक मुख ही दिया है यदि दस देते तो हमारे लिए समस्या हो सकती थी।

3. शहर के लोगों को राक्षस इसलिए कहा गया है क्योंकि वे दस लोगों का अनाज दबा कर अपने गोदाम में रख लेते हैं। और अन्न संकट पैदा करके महँगे दामों में बेच देते हैं।

4. "एक दिन सब छोड़कर चले जाते हैं।" इस पंक्ति का आशय यह है कि व्यक्ति धन के लोभ में पड़कर धन कमाता है लेकिन इस सच्चाई को भूल जाता है कि उसे सब कुछ छोड़कर चले जाना है।

5. अधिक से अधिक धन कमाने की

लालच के आचरण से व्यक्ति सुखी नहीं हो सकते।

ड़. 1. फूल तथा काँटे के व्यवहार में अंतर यह है कि फूल जहाँ अपने सुंदर रंगों व खुशबू से दिल खुश कर देता है तथा तितली व भँवरा इसका रसपान करते हैं, वहीं काँटा अपने व्यवहार से किसी की उँगली में चुभन देता है, किसी के वस्त्र फाड़ देता है और तितलियों के पंख व भँवरे के शरीर में चुभ जाता है।

2. देवताओं के शीश पर फूल शोभायान होता है।

3. सभी की आँखों मे काँटा खटकता है, क्योंकि वह भँवरे के शरीर में चुभ जाता है, तितलियों के पंख फाड़ देता है और व्यक्तियों के वस्त्र फाड़ देने के साथ-साथ उनकी उँगुलियों में चुभन देता है।

4. बड़प्पन की कसर से अर्थ है उसके अच्छे कर्मों द्वारा किया गया कार्य जिससे उसके कुल का गौरव बढ़े।

Page-148

ढ. 1. पंडित जी ने प्रायश्चित के लिए 21 तोले सोने की एक बिल्ली दान में देने तथा इक्कीस दिन तक पाठ कराने एवं दान-दक्षिणा देने का उपाय बताया। इससे उनकी लोभी स्वभाव की जानकारी मिलती है।

2. पहले सवैया में रसखान जी ने अपने आराध्य प्रार्थना की है कि वे जब भी जन्म ले गोकुल नगरी में ही ले। उन्होंने ऐसी प्रार्थना इस कारण से की है क्योंकि उनके आराध्य की देखस्थली गोकुल गाँव है।

3. बालासुंदरम में गांधी जी के समक्ष अपना साफा इसलिए उतारा क्योंकि वे गांधी जी के प्रति अपना सम्मान प्रकट करना चाहते थे। उस समय गिरमिटिया या हिंदुस्तानी जब भी अंग्रेज के घर जाते थे तो उनके सम्मान में पगड़ी, टोपी या बँधा हुआ साफ़ा उतार देते थे। गांधी जी ने बालासुंदरम को ऐसा करते देखकर साफ़ा बाँधने को कहा। वे बालासुंदरम को सम्मानित करना चाहते थे।

4. भोलाराम को पाँच साल से पेंशन इसलिए नहीं मिल रही थी क्योंकि उसने अपने विभाग के अधिकारियों को रिश्वत भेंट नहीं की थी। इससे पता चलता है कि हमारा सरकारी तंत्र भ्रष्टाचार से ग्रसित है। कोई भी सरकारी काम बिना रिश्वत दिए हम नहीं करवा सकते।

ण. इस सवैया का अर्थ है कि कृष्ण के साँवले शरीर पर धूल शोभित हो रही अर्थात् कृष्ण जी धूल से सने होने के कारण सुंदर लग रहे हैं, उस पर उनके सिर पर चोटी शोभा पा रही हैं वे आँगन में पैरों की पैंजनी बजाते हुए ओर पीली लँगोटी पहने हुए खेल रहे हैं।

त. 1. बसा हुआ, संपन्न

2. सामने

3. गलती या पाप होने पर पश्चाताप करने को उपाय

थ. 1. सुदरं सृष्टि

2. रसखान ने कौए को भाग्यशाली इसलिए कहा है कि कौआ उनके आराध्य देव के हाथ से रोटी-माखम लेकर उड़ जाता है। इस सुख का अनुभव रसखान जी स्वयं करना चाहते हैं।

3. भोलाराम का जीव सौ–डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल में अटका हुआ था।
4. नेटाल के गोरों को हिंदुस्तानी मज़दूरों की आवश्यकता वहाँ की ज़मीन में ईख की फ़सल उगाने के लिए थी।
5. ईश्वर की मनुष्य को देन दो हाथ है।

खंड 'द'

द. 1. विद्यार्थी स्वयं करें।

घ. 1. विद्यार्थी स्वयं करें।